उसका क्या होगा

उसका क्या होगा

भगवती लाल शर्मा

शिक्षा का क्षेत्र बहुचर्चित क्षेत्र है, जिसकी एक कड़ी अध्यापक है, दूसरी कड़ी विभाग, उसकी व्यवस्था। स्थानांतरण जैसे विषय को अक्सर तूल मिलता रहा है जिसके राजनीतीकरण होने की सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता। दूसरी तरफ है आदर्श शिक्षा, आदर्श स्कूल व्यवस्था और ग्रामीणजनों का विश्वास। शिक्षा किस तरह से और किन जालों व चक्रव्यूहों में फंस गई है इसको आधार बनाकर लेखक श्री भगवती लाल ने यह उपन्यास लिखा है। ये स्वयम् अध्यापक हैं अतः उपन्यास वास्तविकताओं की पृष्ठभूमि पर उभरता है। अवश्य पाठक इस उपन्यास को वर्तमान शिक्षा माहौल का सही दस्तावेज पायेंगे। यही इस उपन्यास की विशेषता है

प्रकाशक

शिक्षा का क्षेत्र बहुचर्चित क्षेत्र है, जिसकी एक कडी अध्यापक है, दूसरी कडी विभाग, उसकी व्यवस्था। स्थानान्तरण जैसे विषय को अक्सर तूल मिलता रहा है जिसके राजनीतीकरण होने की सच्चाई को भी नकारा नही जा सकता। दूसरी तरफ है आदर्श शिक्षा, आदर्श स्कूल व्यवस्था और ग्रामीणजनो का विकास। शिक्षा किस तरह से और किन जालो व चक्रव्यूहो मे फस गई है इसको आधार बनाकर लेखक श्री भगवती लाल ने यह उपन्यास लिखा है। वे स्वयम् अध्यापक हैं अत उपन्यास वास्तविकताओ की पृष्ठभूमि पर उभरता है। अवश्य पाठक इस उपन्यास को वर्तमान शिक्षा माहौल का सही दस्तावेज पायेंगे। यही इस उपन्यास की विशेषता है

प्रकाशक

उसका क्या होगा

किरण तक नही पहुची विकास के चरण तक नही पहुचे। एस म मैंने निकाले आठ माह वहा। मेरा भगवान ही जानता है, मैं वहा कैसे रहा।

सब अपनी अपनी बीन बजा रहे थे, पर शर्मा साहब तो भैंसा हो गये थे कि जिसके आगे बीन कोई अय नहीं रखती, या उनम नक्कार खाना शुरू हो गया था कि बीन की आवाज उनके लिए तूती की आवाज बन गई थी। पसीना पोछा पानी पीया। भीतर बाहर टूट कर पड़े कोहरे के अधकार म टिमटिमाते दीपक की ओर आखे बद किये दौड पडे वे एच० एम० स सी० एल० के रूप मे दया का महासागर पाकर सुमन जी की ओर। चिताड आय। सुमन जी चौराहे पर न मिलकर घर मिल गय होते तो वो पावा म लाट-लोट जात। रो रो कर घर भर दते उनका। मिमिया मिमिया कर पिघला देते उस पत्थर के बुत को। क्या नही करत ! पर यहा कुछ नही कर सके बस हाथ जोडकर खडे हो गय, आखा म आय पानी को आखो म ही निगल कर। दखा ताक मान आदमिया म घिरे सुमन जी ने उनकी पीठ पर हाथ रखा और फूल मे हसते हुए महकते चेहरे से अमृत बरसाया--- जा कल तेरा काम हो जायगा।"

इन शब्दा क लिए साथ वाला क नयना न सुमन जी पर पुष्प वर्षा की और शमा साहब क रोम रोम न घण्टा ध्वनि के साथ उनकी आरती उतारी।

घर पर इस स्थानान्तर की खबर का परिजन की मत्यु के समाचार के सदश सुनी गयी, पर योग्य चिकित्सक क समय पर आ जान स जीवन क प्रति बधन वाली आशा की तरह सुमन जी स मिले आश्वासन स कुछ राहत मिला

सुबह हात न हात चाय पी न पी, शमा भाग सुमन जी के बगले पर। सूर्योदय की लालिमा बगल की सफेद झक चादनी जसी दिवाल पर साना मढ रही थी। पास हा दूध बचन वाली की आवाज, और उस आवाज स सहमकर उडे कबूतर नील नभ क गभ म समाय जा रह थ। भीतर जाउ,

न जाउ इस सकोच म वे पाच चक्कर वगने के लगा चुके थे । भगवान न सुनी और एक नोकर वाहर निकल आया । सुमन जी के उनर हुए कपड खादी की पेंट और बुशट उसने पहन रखी थी । उ होन उससे उचे दर्जे का नमस्त किया ।

'ट्रासफर के लिए आय हो ?" उसन पूछा

वे उत्तर दें, इससे पूव ही उसका अगला प्रश्न आया—"क्यो, हो गया ट्रासफर ?'

तीमरा प्रश्न भी न आ जाए, अत वे झट बोले बात दरअसल यह है कि आजकल है नौकरपशा लोगा के बुरे दिन है । समझ रहे हा न वक्त किनका है । खर साहब, आप वोल ता सकने नही अब मैं यह कह कि उच्च प्राथमिक विद्यालय म सुमन जी क भनीजे की तबियत नही लगी तो सुमन जी ने उच्च माध्यमिक मे उसका टासफर करवा दिया कि कर बेट मौज तू ता, मे जि दा हू तब तक । और उनके स्थान पर एक नेता के भाई को झर यनी से इधर बुलवा लिया और उधर बरस्ती के लिए म ही एसा जीव था जिसके हाथ ता हैं पर किसी क चरणो तक उसकी पहुच नही । जिसके जवान तो है पर उस पर किसी का नाम नही । इसलिए मेरा स्थाना तर बाबू साहब वहा हो गया । सुमन साहब कब तक उठ जायेंगे ? मुझे बुलाया है आज उ होन ।'

व तो जयपुर पधार गय । नगर पालिका के चुनाव क सिलसिल म । दो या तीन दिन लग जायेग । मुझे आपना नाम नोट करवा दीजिए । आपके लिए खास तौर से बात दूगा ।'

सूरज पूरा निकला नही और डूब गया । शाम हो गई और फटाफट रात घिर आई । घोर अधकार बादल ही बादल । उतरत वक्त एक सीढी चुक गय । गिरते गिरत बच ।

सुमन जी को इतजार म पाच दिन निकल गये और इन पाच दिना म उ ह विद्यालय से कायमुक्ति का आदेश घर बैठ ही मिल गया । साथ म प्रधानाध्यापक का सदेश भी था । मैं आपका विदा करत हुए वास्तव म दुख

महसूस कर रहा हू। मुझे विश्वास है आप उस स्थान पर अधिक दिन नहीं रहेंगे जैसे साधु लोग किसी एक स्थान पर चौमासा करते है, वस ही आपको भी वहा केवल चौमासा निकालना है। मैं आपको व्यक्तिगत रूप से सलाह दूगा कि सुमन जी के पीछे लग रहने से आपको सफलता मिलेगी। सुमन जी से मेरा नमस्कार कह दीजिएगा।

सुमन जी छठे दिन आये। वे इन्तजार में थे ही। "मैंने इन्सपेक्टर से बात करली है। परसों संशोधन निकल जायगा।"

उनका कोहरा फट गया। साफ उजले चांद की अमृत बरसाती चांदनी निकल आयी।

परसों जिला शिक्षाधिकारी बाहर चले गये। वे आये तो सुमन जी जयपुर चले गये। यों ही यों एक पखवाड़ा पूरा हो गया और अभी कागज पर मक्खी भी नहीं बैठी। जेब का पैसा खतम, घर का पैसा खतम, वेतन का पता आया ही नहीं। छुट्टियां सब खतम, धैर्य पूरा खतम। रात्री का त्यौहार बगैर पैसे हो नहीं सकता। ट्रांसफर वापस होगा नहीं। गाड़ी घर बरनी नहीं। भाग यहां से, भाग जाओ बस। एक बार साहब से मिल लेना चाहिए। साहब ने साफ कहा— सुमन जी ने जिन दो व्यक्तियों के लिए कहा उनको हमने बदल दिया।

फिर भी श्रीमान मेरी अपनी परिस्थितियों पर थोड़ा विचार हो जाए तो इस मुर्दे को थोड़ी जिन्दगी मिल जाए। इतनी दूर की नौकरी में आर्थिक भार बढ़ जायगा। मेरी बड़ी विवाह योग्य हो गई है। मेरा बच्चा यहां हायर सकेण्डरी में पढ़ रहा है। एक परिवार तीन जगह हो गया, एक दोष सा बनता तीन जगह बंट गया। मेरे माई-बाप नहीं, मेरे माई जरिया नहीं सब कुछ आप ही हैं आप ही तो हैं। कुछ दया कीजिए। गरीब का भला भी मैं सब शायद राम हो जाएगा।

'आपकी कोई सिफारिश नहीं। आपको जाना पड़ेगा। हम अपनी जगह भी मजबूर हैं। आपको समझना चाहिए।

'हमारे ट्रांसफर होते हैं और आपकी बनिया में खुशियां महकती हैं।

हम आपकी कलम से कत्ल होते हैं और आपको जीवन की खुशबू मिलती है। बकरे की जान जाती है ओर कसाई की रोटी बनती है। हमारा परिवार आपके दृष्टिपात से कराह उठता है और आपके घर आनन्द की हवा बहती है।"

यह सब वे कहना चाहते थ, पर क्रोध ऐसा उमड आया कि वे कुछ न सुना सके। उनका सुनाना निरर्थक ही जाता। साहब की टाइ पकडकर खीच लेना चाहते थे वे पर बीस साल की नौकरी उस पर अधेडावस्था की तमाम बीमारिया, कुमारी लडकिया, पढते बच्चे बूडे मा बाप न ऐसी बाह पकडी कि कुछ न कर सके, एसी जबान चिपकी कि कुछ न कह सके।

लौटते वक्त सयोग स सुमन जी मिल गय। अधकार म प्रकाश !

'महावीर, मेडिकल ले ले। यह इसपेक्टर वसे ही बदल रहा है। आने वाला अपना ही है।"

उन्होने सुमन जी का इस सलाह क लिए धन्यवाद दिया और घर चल आये। हार थक कर आत्म हत्या अतिम निर्णय रह जाता है। उन्होंने भी अपना निर्णय सुना दिया बडे ही कष्ट क साथ पत्नी का।'

पत्नी के कहने से दो एक बार और मिल आये साहब से। वे टस से मस नहीं हुए। और बिगाड आये रुपया उधार का और बिगाड आये कुछ छुट्टिया अस्वस्थता की। और बकरा कितने शनिवार टालता शर्माजी को भी। ट्रासफर पर जाने की तयारी करनी पडी।

बस स्टेण्ड पर माता पिता को छोडकर उनकी पूरी दुनिया उन्ह पहुचाने आई। उनका ल जाने वाली बस को देखने ही आसू जो बहने लगे तो रुके ही नही। बच्चा न चरण छुए। पत्नी का सुबकता चेहरा देखा, बडी कठिनाई स भीतर मे उमडकर आती हुई चीज पर नियन्त्रण किया और दौडने से पूर्व ही चलती हुइ बस म चढ गये। पीडा में भीगे, चलती हुई बस से उन्होने देखा पहले परिजनों के पूरे शरीर फिर केवल आसुओ की बाढ म डूबे चेहरे और फिर केवल बरसता पानी जो जबरन उनकी आखो मे घुस आया इसलिए इसके बाद उन्हे कुछ दिखाई नही दिया।

पर उछाल-उछाल कर इतने मोती बरसा रही है कि उस पार के दृश्य दिखाई ही नही द रह है। इन्द्र हार और मोतियों की लडिया, स्वय ही स्वय के श्रृगार मे रत सरिता महारानी गीत सगीत म बेसुध हुई, बेसुध करती जा रही थी।

प्रात काल उनकी एकल सेना न रावत भाटा से कूच किया। हाडौती के सख्त पठार को कोमल चरणो से रादन, वृक्षो के झुरमुट मे निकली पगडण्डी पर उछलत-कूदत, अपनी देखी हुई फिल्मो के गीत गुनगुनाते चले जा रहे थे। पेट भी खाली था, तो दिमाग भी खाली था, वसे ही पगडण्डी पर न जानवर था न इन्सान, पक्षी जरूर थे। रास्ता भी पूछा तो किससे, भगवान भरोसे आगे बढे चले जा रहे थ। पठार के छोर पर कुछ लठैत बैठे मिल गये। मस्ती के आलम मे उन्ही से रास्ता पूछा। उन्होने पहले तो अपन साथ दम लगाने का प्रस्ताव रखा, बाद मे रास्ता बताया।

ढाल उतर कर उन्होंने दो किलोमीटर कीचड से लोहा लेते हुए गाव मे आकर विजय-दुन्द भी बजायी।

स्कूल म अच्छा स्वागत हुआ। चाय-पानी, दूध, भोजन की मनुहारो पर मनुहारें हुइ, सबने भोजन करन का वादा लिया। काज की बाते हुईं, जिसे कल पर छोडकर समय समाप्ति पर उठ गये।

रात काली थी ही, बादलो ने इसका रग और गहरा कर दिया। बाहर निकलो तो कीचड, भीतर रहो तो अकेलापन। जाओ तो जाओ कहा—जगल स आती हुई हिंसक पशुओ की आवाजो ने और दिल म सुने हुए इस क्षेत्र के चोर डाकुओ के किस्सो ने हालत खराब करदी। नीद भी कही नीद निकालने लग गई, प्रतीक्षा ही करते रह गये।

सुबह उनके दिमाग मे एक ही विचार था—इधर नही रहना। वहा का खाना पीना भी गले नही उतरा। हाजरी मे दस्तखत किये और जेल से फरार कैदी की तरह भाग निकले। न पन्द्रह रुपये के राह खर्च की चिंता की, न सौलह किलोमीटर पवत और कीचड रादने की फिकर की।

घर जान के बजाय चित्तौड ही रुक कर साहब से मिलना उन्होंने

तय किया। किस्मत के धनी थ, सो साहब घर पर ही मिल गये सुबह। साहब न मुस्करा कर देखा कुछ राहत मिली।

आपन लिखकर तो द रखा है ?'

'जी।

हम आजकल म उन्ही पर विचार करने वाले हैं।"

"बहुत दया साहब आपकी। एक तो मुझ म बहुत ज्यादा कमजोरी है कि मैं अपनी बडी बात को भी जानदार शब्द नही द पाता। इसलिए वह श्रीमान क समक्ष छोटी बात भी नही रहती। बिना चाह केवल छह माह म ही मेरा ट्रासफर हो गया बिना किसी कसूर के ही हो गया।"

'यह तो आपको हमन हेडमास्टर बनाया है।

मुस्करा कर रह गय साहब। ऐसी विपली मुस्कान कि व काप उठे। दूसरे दिन आफिस भी हो आय और मेडिकल छुट्टिया के लिए अर्जी भी द आये। दो दिन बाद फिर आफिस गय। लिस्ट निकलन वाली है दो एक दिन म निकल जाएगी, पता लगा आय। चार दिन बाद पुन गये, पता लगा कि नता लोगा क अडगे ऐस लग रहे हैं कि एक एक के चार चार स्थान बदल जा रहे ह, उधर से तय हो जाय तो लिस्ट निकल। और यो डेढ माह गुजर गया तब लिस्ट निकली जो उनके लिए खोदा पहाड निकली चुहिया थी। उनका नामोनिशान नही था उसमे। साहब के कमर म जहर म बुझे तीर -बनकर घुस।

साहब, मेरा लिस्ट म नाम नहा आया। वह तमतमाये हुए थे पर काप रह थ गुस्से के कारण।

मैं क्या कर सकता था। ऊपर के दबावो की वजह से तुम्हारा नम्बर नही आ सका। साहब न धय स जवाब दिया।

उनकी इच्छा हुई कि उनस कहे कि आप ऊपर वालो के लिये बठे हैं या अध्यापको के लिये। उनके मन मे आया कि वह खूब जली कटी सुनाए साफ साफ कह कि यह उनके साथ अन्याय है और सरासर पक्षपात है। लेकिन फिर गुस्से की ज्यादाती म उनकी जबान रुक गई। उन्होने सिर्फ

इतना कहा— जब आप कुर्सी पर बैठकर भी हमारी मजबूरिया और कष्ट को नही देख सकते है तब हम किसके सामने अपना दु खडा कह।

इतना कहकर वे हवा बन निकल गए वहा से। वे सोच नही पा रहे थे कि अब उन्हें क्या करना है, यानी किंकर्तव्यविमूढ। इस स्थिति से उतरने के लिए वे इधर से उधर घूमने लगे। एक आस थी टूट गयी। आस टूटी कि जिन्दगी टूटी। जिस आस पर छुट्टिया बिगाडी, आफिस के लगा लगा चक्कर घर का काम बिगाडा, उधर स्कूल बिगडा, उस पर ओस गिर गई। आस कि जिस पर पत्नी की, बच्चो की माता पिता की धडकने सामान्य गति से चल रही थी, बिजली गिर गई।

सुनो !' एक व्यक्ति ने पीछे से उनपर हाथ रखा।

उन्होंने पीछे देखा। आह ! आप ! बाबू साहब ! नमस्ते।"

आइये, मतलब कि इन्दौर काफी हाउस मे बैठते है।"

'अच्छा, लेकिन '

'घबराइये नही मैं कह रहा हू मतलब कि ।

काफी हाउस के एककोन मे दोनो जाकर बैठ गये।

मुझे आप मतलब कि पहचानते हैं।"

"आपको क्यो नही आप हमारे कार्यालय रूपी मदिर मे प्रति दिन भेट पूजा से प्रसन्न होने वाली सुन्दर प्रतिमा हैं।

नही-नही ऐसा नही। मतलब कि असल पहचान कितनी कठिन है, आदमी की असली पहचान भी मतलब उतनी ही कठिन है मतलब कि। मेरी सुनिये, मतलब यह कि नाम, पद, और सूरत वाली पहचान मतलब कि असली पहचान नही होती। मतलब यह कि असलियत कुछ और होती है मतलब। जो उस असलियत को मतलब कि पहचानता है वही मतलब कि वास्तव मे पहचानता है। सुनिये तो सही ! मतलब कि मै जानता हू आप कौन है मतलब, आपको क्या चाहिए मतलब। मतलब समझे न आप कि मतलब आपको ट्रासफर चाहिए। सुन तो लो ! मतलब कि मेरा भी ट्रासफर हो गया था मतलब। दो ही दिन मे कैंसल करवा लिया। मतलब

कि। मतलब कि रुपया पानी म रास्ता बनाता है समझे मतलब। लीजिए चाय मतलब।

बात पते की लगी उनको। कान खडे कर लिए। चाय पी रहे थे। मगर सम्पूर्ण ध्यान सामने वाले के चहरे की ओर था।

मतलब समझे न आप रुपया आठ सौ खच हुआ मतलब।"

' आठ सौ ?

' बच्चे हो मतलब कि ।

' अरे मालिक साहब ! अध्यापक बचारा ! फूक फूक कर तिल बिनने वाला आठसौ क सामने कस खडा रहगा, इतना तो सोचो ! '

' मतलब कि आपकी मर्जी क्या है मतलब ?'

यही चार सौ पाच सौ।'

आपक लिए सिफ मतलब कि लेकिन नगद मतलब पाच सौ इस हाथ लेना इस हाथ दना, समझ गय न आप ? मगर हा ट्रासफर चितौड होना चाहिए।"

'हो जाएगा मतलब कि। इसी सप्ताह म मतलब। बस रुपया तैयार रखिये मतलब।"

उन्होन हिसाब लगा लिया था – सिंगपुर से झरसनी आन जाने म पच्चीस रुपया साफ होता है। माह मे एक बार की औसत स दो वष पूव ट्रासफर नही होन क नियम स बीस बार आन जान के पाच सौ रुपये वसे ही खच हो जायगे। अत पाच सौ देकर ट्रासफर अपनी इच्छित जगह करवा लन स कुछ आर्थिक बचत मानसिक परशानी और घर की चिंता से मुक्ति मिल जायगी।

छुट्टीया तमाम प्रकार की खत्म हो गई ह और वहा चलकर सात दिन किसी तरह दुखम-सुखम निकाल आना है। उस दिन रवाना होकर अगले दिन व झरसनी पहुच। जाते ही उपस्थिति दज करदी। हेड मास्टर हैं, सर्वेसर्वा स्कूल के, कौन हाथ पकडे और फिर इतना सा तो चलता है— आटे म नमक डाले इतना। सहायक अध्यापक दखल दे सकते नही जिसे

सम्था म रहना नही हो आराम स वह एसा करे। सव जानते हैं, इतना तो पानी म रहना और मगर से वैर रखना, पार नही पडता।

पानी निकल गया, कीचड सूख गया और एक फक्कड के यहा ढग का आश्रय भी मिल गया इसलिए उनका मन जरूर लग गया, और रहना फिर कितने दिन, केवल पाच दिन शनिवार को तो सुवह ही बस साइन चेपक्र चले जाना है। इधर तो अब एसा ही चलेगा।

छात्र स्कूल म कुल चोसट थे। सत्ताइस अविभक्त इकाई म शेष आठवी तक की कक्षाओ म। वसे ही कमरे भी कुल तीन थे, जिसम एक पूरा कायालय के लिए था। टीचर जरूर मात थे। विभाग म ट्रासफर लगा रहता पढाते कस वे। कक्षाओ म जाते तो जाते, इधर उधर घूमकर टाइम पास कर देते। टाइम ही तो पास करना था उनका।

हेड मास्टर बनकर खो रहे थे, पा रह थे तो सिफ विशेष वेतन के रूप म पच्चीस रुपया महीना। बाहर से घूम घामकर आफिस मैं आकर बैठे ही थे कि अविभक्त इकाई से शिकायत आई— एक लडकी है, जिसका नाम है, बबली जो अपनी दरी पर किसी को नही बठने दनी है ! उसको जाकर ठीक करना है। मास्टर साहब कक्षा म नही हैं।

उनके दिमाग को हल्का सा करण्ट लगा। वे उठकर कक्षा मे गये तब तक मास्टर साहब भी आ गये। उनकी मुस्कान उन्हे काटा चुभोकर मजा लेने वाले की लगी।

'आप गये कहा थे ?"

उनके इस प्रश्न के लिए मास्टर साहब कतई तयार नही थे।

सकपका गये पर तुरन्त सम्हल गए—अइसा है होकम क लवो चाडी गिरस्थी है। हारी बीमारी, काम काज लगाइ रेता है। भाजन बनन में देरी हो इ जाती है। स्कूल टेम पर आना पडता है। समय की पाब दी पेली चीज है होकम। भोजन के लिए गया था।"

इस बार हाई वोल्टज का करन्ट लगा। उनकी ओर मुह घुमाकर उन्होने लडकों की ओर देखा। पाच मैली कुचेली लडकिया थी और

बाकी लडक। कश्मा को देखा तो ऐसा लगा जमे लडके खेल कर बठे हा।

कौन बवली है ?"

मास्टर साहब न वताया—' ये होक्म ये। छारी खडी हो ये।'

लकिन बवली थी कि न खडी हुई न उसन ऊपर ही देखा। एक पूरी दरी पट्टी को समेटकर आसन जमाय बठी थी। काली इतनी की अमावस उसक सामन पानी भरे। इस कदर काले चेहरे पर रूखे वाल उसकी पूरी कहानी कह रहे ये वहा दोना आखें घटाटोप बादला के बीच रह रह कर बिजली की तरह चमक जात ये। फ्राक और हाथ परा को पानी कइ दिनो से नही लगाया गया था, वसे ही नाखूना को भी हफ्तो से नही देखा गया। टटी सी सलेट जिस पर 'अ 'आ लिखा हुआ था और उस पर चाक का एक टुकडा उस कृशगत बालिका के सम्मुख पडा था। सामने का पहला दात उसका एक ना दिन हुए टूटा था।

दो साल से ह हाकम य पहली इकाइ म। पढती इ नइ। मार मार कर हार गये हाकम इसका। ढोली दुम की लडकी हे होक्म। पढकर क्या करगी। कइ ढोल।

यह तीसरी बार करण्ट लगा उनको और हल्क म उनकी चीख निकली— दायमा साहब।' मास्टर साहब चुप हो गय। शमा जी बवली के सामन बठ गय— दखा बेटा ! य सारे अपन भाइ बहन ह। इनको भी बठन दा। बवला न हिली। उसन उनकी ओर दखा और देखकर नीची गदन करली।

बेटी ! अपना नाम बताओ।

बवली चुप।

नाम बताआ बिटिया।"

!

' बिटिया रानी का क्या नाम है ?

' ।'

'अरं प्यारी बिटिया तू ता रानी बिटिया है दरी पर उस भी बठन दगी न प्यारी बिटिया।

और यो प्रत्येक नुस्खा उन्होंने आजमाया पर बबली ने एक नहीं खाया। उनका पारा थोडा गम हो गया। और ता उन्होंने कुछ नहीं किया दरी पकडकर खींचना शुरू किया। बबली न उनकी टागे पकड लीं, इससे वह भी दरी के साथ घसीटती आने लगी। उन्हें उबाल आ गया। एक हल्की सी चपत लग गई उनसे उसके। वह चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी। वे उस वही रोती हुई छोडकर आफिस म आ उठे। बबली उनके दिमाग के के भारी भरकम किवाड तोडकर भीतर घुस गयी। उन्हें समय बीतने के साथ साथ उसकी उपस्थिति का अधिक से अधिक एहसास हाने लगा।

शनिवार का व दस बजे ही 'माइन' करके निकल गए। साथी न उनका दो सौ रुपय, उधार देते वक्त यह सलाह दी कि रुपया उनके पास हैं। पहाडी माग म अकेले जाना, खतरा मोल लेना है। साथ है, इसलिए चले जाना चाहिए।

जम ही रास्ते म व अकेले हुए, बबली उन्हें सताने लगी, और घर आने तक पूरे दस बारह घण्टे सताती रही। बबली न जो प्रश्न पदा किये कि बबली क्या नहीं पढ रही है ? बबली घृणा क्यो करती है ? मा' साहब उसके प्रति जिम्मदार क्यो नहीं है ? उसे वनानिक विधि से क्या नहीं पढाया जा रहा है ? बबली की ऐसी हालत क्यो है ? इसके उत्तर व खाजते म लगे रहे। जिन खोजा तिन पाइया' उत्तर मिले और उन उत्तरो के आधार पर उन्होंने कुछ निणय लिये। हालाकि उन्हें बीच बीच म ट्रासफर याद आता रहा कि ट्रासफर अपना निश्चित है अत य सारी बातें सोचना निरथक है पर बबली पीछे हाथ धोकर ऐसी पड गई कि उससे मुक्त न हो सके।

घर आते आते उन्होंने सबका भुला दिया। केवल इस बात का याद रखा कि 'आडर कल यह। से लना है, परसा वहा पहुचना है रिलिव होना है और इधर आना है।

बस स्टेण्ड पर डिप्टी साहब मिल गय। नमस्ते भी नहीं किया उनसे और निकल गए। ऐसे डिप्टी जसे अफसरो को निकट से देखा है उन्हाने।

खतम हो जाती है। पान परमेंट निकाला करो खिलाई पिलाई के लिए। खुशिया वुशिया यों ही नही मिलती। खरीदी जाती हैं, खरीदी!

आपकी सूचना के लिए बता दूं कि खुशी का सौदा सात दिन पहले कर लिया है मैंने? चाय वाय बडी चीज नही है फिर कभी! अभी मैं जरा दौड भाग में हूं।

पूछते हुए वे बाबूजी के ठिकाने पहुच गए। एक महिला शायद उनकी पत्नी मेहदी लगा रही थी। बाबूजी चारपाई पर लम्बे होकर चने चबा रहे थे। उनको चारपाइ पर बैठने की जगह देकर चने की थाली उनके पास खिसका दी। जेब से एक कागज निकालकर उनको दिखाया।

'मतलब यह कि एप्लीकेशन की जरूरत आ पडी मतलब! मैंने ही टाइप की मतलब। आपके हस्ताक्षर भी देखला मैंने ही कर दिए मतलब यह कि। और यह काम सारा मतलब ऊपर से हुआ। लिखा न मतलब "आइ आ एस चित्तौड फार नेसेसरी एक्शन' मतलब काम हुआ आपका। अब तो मतलब कि इन्सपेक्टर के आने की देर है मतलब! जब रुपये की जरूरत पडेगी साहब मतलब कि। बच्चे के माथे पर हाथ रखता हूं मतलब, मुझे कुछ नही चाहिए। रुपए के बिना देखो गाडी फस गइ तो मतलब फिर मुझ मत कहना मतलब।

'मैं कल कुछ करूंगा—ठीक है।'

'अरे उठ कहां रहे हो आप, मतलब कि चाय तो पी लीजिए।'

'नहीं, बस, धन्यवाद।'

बच्चे से कौन मिले। उसी वक्त घर के लिए प्रस्थान कर गए। हां, सचमुच वक्त पर यदि रुपया न पहुचे तो काम न हो, और काम तो करवाना ही है। उस नरक से निकलने की कीमत जितनी भी चुकानी पड चुकी दो, मगर वहां मत रहो। दो बजे रात पत्नी को आ जगाया। सारी स्थिति उसको समझायी। स्थानान्तर वाली बात तो उसकी समझ में आ गइ पर यह देने की बात पल्ले नही पडी। उन्होंने भी ट्रांसफर के लिए तो उसे कहा था पर रुपए के लिए इसलिए नही कहा था बेचारी अच्छे विचारों

वाली औरत पर गने बिचारा वाल ममार की छाया पड जायगी। और गरीव शरीर पर पाच सौ रुपए की चोट और जिसके कारण जीवन भर कराहती रहेगी। सब कुछ सुनकर उसने इतना ही कहा, कलजा निकाल देन वाली आह के साथ — मुफलिसी म आटा गीला हो रहा है और तो कुछ नहीं।

एक बात है देवी! यह भ्रष्टाचार म जा रहा रुपया मानव की आत्मा के लिए सहार का कारण बन रहा है। कोई मरन के लिए जहर पीता है, मैं जीन के लिए जहर पी रहा हू। रुपय का प्रबन्ध तो देवी, कल मुझे ही करना है।

सुबह उनकी देवी न तीन सा रुपए लाकर उनका दिए।

इतना ही मिल सका। दूसरी-तीसरी जगह म कही नही गई। क्या जाती! लाग ऐसे हैं कि उधार देग तो ऐसा जताकर जस भीख दे रहे हो। और अहसान का पहाड बापरे बाप ऐसा रख देंगे कि मैं तो उसके नीचे दबकर मरन से या ही मरना बेहतर समझूगी। फिर अपनी बात बाहर जाती है पोजीशन खराब होती है।'

ठीक है दो सौ मरे पास है। छोकरे के कपडे वगरह फिर बाद म देख लेंगे। मैं उससे मिलूगा ही नहीं सीधा निकल जाऊगा। जब के आऊगा तब तक तो तनखा मिलेगी ही मिलेगी।'

घर से खाना खाते ही चल दिए। चित्ताड सीधे बाबूजी क घर गय। पाच सौ रुपए उनके सामने गिन दिए। उनसे पक्का करवा लिया कि इस सप्ताह तक काम हो जाना चाहिए।

'काम तो मतलब ऐसा होगा कि दस वष तक चित्ताड स हटाने वाला नही मिलेगा मतलब।

मिलना चित्तौड ही चाहिए। लडका यही पढ रहा है उसकी सार सम्हाल हो जायेगी। देखो, इसीलिए पसा खराब कर रहा हू। इतना बार बार इसलिए कह रहा हू कि सारी बातें ध्यान म रहे। अच्छा तो इजाजत दीजिए।"

सोमवार को वही पाच बजे स्कूल पहुचे। हाजरी लगा दी बेधडक ! अगले दिन स्कूल म जाते ही उन्हे बबली याद आ ई। वे सारे प्रश्न और उनके उत्तर याद आये। पर बबली कही दिखाई नही दी। बबली स मिलन की इच्छा को मन म ही दबाकर कुछ आवश्यक पत्रो के जवाब देने व , गए। तीसरे क्लास म बबली की जगह उसकी शिकायत उनके पास आई कि उसने पास वाले छात्र को जोर से काट डाला।

उन्होने जाकर पहले उस छात्रा को देखा। कुहनी के नीचे उसने इतना जोर लगाकर काटा कि भीतर की सफेद चमडी निकल आई। बालक दद से चिल्ला रहा था, और वह ऐसी मालकिन बनकर बैठी थी जैसे यह सब करने का तो उसे अधिकार है—जैसे उसने कुछ किया ही नही।

"नालायक छोकरी, मार दूगा जान से अब की बार किसी को काटा या मारा पीटा तो।"

और कुछ गुस्सा ठडा करने के लिए, कुछ उस रोने वाले बालक को शात करने के लिए, और कुछ उसे डराने के लिए एक जरा जोर का हाथ उसके गाल पर मार दिया। आज वह रोई नही। गर्दन उठाकर उनकी ओर देखती रह गई। बस वही छोड मास्टर साहब स पूछने लगे— 'आप भी दायमा साहब की तरह खाना खाने गये थे क्या क्लास छोडकर ?"

"क्लास छोडकर क्या साहब मैं जरा ह न साहब बीडी पीने की आदत है, ह ह।'

कुछ समय बाद उ ही चौहान साहब का उन्होने आफिस मे बुलाया।

"ह ह, साहब फरमाइये।"

"पद्रह वष पहले ही जो शिक्षण विधि स्कूलो से निकल गई, आप उसी विधि स बच्चो को पढा रहे है, स्वर, व्यजन और बारहखडी रटा रहे है इन्ही पर कलम घिसवा रहे है। आप जरा सही विधि काम मे लीजिए, बस यही निवेदन है।

'वो तो साहब ह ह साहब हमारे बाप दादा भी इसी विधि स पढे हैं। ह ह साहब ये भी पढ जायेंगे। यह विधि अच्छी है साहब ह ह।"

अच्छी सिफ इसीलिए लगती है आपको कि आपने इससे अच्छी विधि अभी काम म ली नहीं है। लीजिए और फिर बात कीजिए। अच्छा यह बताइय—इस गाव म इतने ही बच्चे है।

वा तो साहब है ता अधिक ह ट साहब रखत नही मूरख हैं ना साहब ह इसलिए।'

मुझे अफसास है, बबली पर हाथ उठाने का। आप जरा उसे बुलवा दीजिए।

'वा ता साहब मान ही नहीं रही थी मैं हाथ पकडकर बाहर धकल आया साहब हैं हैं साहब और क्या करता।"

आपन भी पीटा क्या उसे ?"

और क्या करता साहब वा।"

'अब समझ म आ रहा है।"

हैं हैं साहब फरमाइय क्यो ?"

'बच्चे स्कल म क्या नही आ रह हैं ? पढाने की दोषपूण पद्धति बालक के साथ अनुचित यवहार और क्त य से न जुडना इसके मुख्य कारण हैं नहीं ?

बबली उनकी वजह से स्कूल म निकाली गई है। उसका वापस लान की जिम्मदारी उनकी है। जिम्मेदारी ता है ही पर जिम्मदारी का काम हो जाए तब ता जिम्मदारी है। उनका अपना ट्रासफर चाहिए। ट्रासफर हो जाए बस। सब को टासफर चाहिए सब का घर चाहिए जिम्मेदारी का क्या दखे कौन दखें ? जिम्मदारी का काम करवाना हो तो ऊपर वाला को भी उनके प्रति कुछ जिम्मेदार हाना चाहिए। जिम्मदार व नहीं माना पर उनका तो होना चाहिए।

करोडा म कुछ लाग तो जिम्मेदार होन ही हैं जिनकी नाक से मानवता सास लेती है जिनके हाथ स मानवता विकसित हाती है। उन्होंने देख लिया कि यहा ज्ञान की जोत हात हुए भी लोगा का प्रकाश नही मिल रहा है। ज्ञान जल नही रही है। क्या नहीं जल रही है यह भी वे जान

चुके हैं। अब क्या वे इस हेतु प्रयास नहीं करेंगे ? क्या गद्दारी करेंगे राष्ट्र के साथ ?'

रात को भी बहुत देर तक वे सो नहीं पाये। ट्रांसफर और कर्तव्य के बीच त्रिशंकु बन लटके रहे। शनिवार को चित्तौड़ के लिए रवाना हो गये। बस चूक गये। रात रावतभाटा में बितायी। रविवार को प्रातःकाल पहली बस से चलकर दोपहर तक चित्तौड़ आये।

बाबूजी घर नहीं मिले। बाजार में तलाशा, नहीं मिले। शाम को कलक्ट्री चौराहे पर जाते मिले। साइकल से उन्हीं के पास आकर उतरे।

"मतलब मैं आपके काम से दौड़ रहा हूँ मतलब। साहब अभी मतलब कि घर है। मुझे रात उनके घर बुलाया है। मतलब कि आपको भरोसा नहीं हो मतलब तो पैसा तैयार है।'

"क्या बात कर रहे हो! मुझे रुपया चाहिए होता तो देता क्या!"

"कल मतलब वापस जा तो नहीं रहे हो ना आप ? मतलब कल आप अपने साथ ही लेकर जाओ आडर।"

खुशी से उछलते वे घर आ गये। बुढ़ापे में पुत्र पाने का वरदान मिल गया हो जैसे। अगले दिन बाबूजी से मिले तो उन पर आसमान टूट पड़ा, बुढ़ापे में पुत्र छोड़ गया हो। जस बाबूजी ने कहा कि आडर उन्होंने बना दिया था। ऐन वक्त दस्तखत के सिनियर डिप्टी ने बीच में आ अपने वाली लगाई। वह आपसे भरा हुआ लगता है। अरे खैर काम आज नहीं तो कल हो जाएगा।

बेचारे वे उफ् तक नहीं कर सके, नजर तक नहीं उठा सके और चले दिये वहाँ से ऐसे ठण्डे होकर कि दस दिन स्कूल में निकाल दिये किसी को पता ही नहीं चला कि स्कूल में हेड मास्टर है। बबली दिमाग में चक्कर पर चक्कर लगाती रही, लेकिन न वे उसे घर से निकाल ला पाये न दिमाग से बाहर कर पाये, और दिसम्बर की छुट्टियाँ हो गईं।

छुट्टियों में भी उनके दिमाग में यही शूल लगा रहा कि ट्रांसफर हो जायगा और बबली को वे पुनः स्कूल में न ला पाये तो एक जवाब बालिका की स्कूल मौत की कालिख उनके चेहरे पर सदा सदा के लिए पुत जायगी।

लेकिन ट्रासफर उनका नही हुआ। छुट्टिया स लौटत वक्त बाबूजी का उ हान सख्ती से मना कर दिया कि अब ट्रासफर उनका नही चाहिए। पर मतलब कि क्या ? 'पहले ता बावूजी आज की तरह भभके फिर ठण्डे पड।

मतलब कि आपक काम के लिए हमने शिक्षक सघ के अध्यक्ष, मत्री सबको साहब स भिडा दिया मतलब। आप समझत हैं कि हमन कुछ नही किया मतलब। जहा से भी तिकडम लग रही है हम लगा रह हैं मतलब। साहब के विदाई समारोह म मतलब सौ एक का खर्चा है, मतलब कि द सक्त हो तो उनस जात जात अडर न लें मतलब यह कि।

मुझे ट्रासफर नही चाहिए।

इससे आगे व कह नहीं सक कि पसा चाहिए।

'लेकिन क्या मतलब ?'

'मुझ अब उधर ही काय करना है एसा मुझे कोई कह रहा है। मुझे कुछ बबलिया और बबलुआ को स्कूल आन का आदी बनाना है। रुपया आप के पास पडा तो क्या, मेरे पास पडा तो क्या।'

तो मतलब सुन लो—दो सौ तो इधर उधर खच हो गया मतलब। तीन सौ कभी भी आकर ल जाना मतलब।

एक धेला भी उसमे स खच नही हुआ। चाहत थ ऐसा कहना पर क्या करें उसका बिल्कुल ही बदल जाय तो और लोगो के सामन बुरे बनो। यह पसा एक तरह स डूब ही गया है, किसी को कह भी नही सकन, यार तुम आर पार हो निकाल कर ले आओ। ओह! बहुत दिल दुखता है आतें मरोडे खान लगती है, पर सिवा सर पीटन क और किया ही क्या जा सकता है?

सही मान म ट्रासफर पर वे आज जा रह थ अपना बोरिया बिस्तर लेकर। झरझनी म दस रुपये भाडे म अच्छा सा स्वतन्त्र मकान मिल गया। पास म कुई आसपास अच्छे खाते पीत सभ्य पडौसी। मकान म आत ही बबली का मकान भी पूछा—वह गाव क उस तरफ आधा किलोमीटर दूर तालाब के उस पार बसी छोटी सी बस्ती मे था।

दूसरे दिन शाम को खाना खाकर वे बबली के घर की ओर चल पडे।

रात का अधेरा घिर आया था। काले आसमान पर तारे निर्दोष काले नयनो मे पुतलियो की भाति चमक रहे थ। बस्ती आने ने पूव ही बकरियो की बास आ गई। बबली का घर बस्ती के किनारे पर ही मिल गया। चारो ओर पत्थर मिट्टी की टूटी फूटी दिवाल, एक पोल जो मरम्मत के लिए मुह खोले खडी थी, और एक छोटा घर जिसमे छोटी सी चिमनी टिमटिमा रही थी। उन्होंने बाहर ही से आवाज लगाई—'बबली।'

"बबली नही है। आप कौन कौन पटवारी साहब? प्रश्न के साथ ही महिला घर के बाहर निकल आई। एक अजनबी आदमी का बाहर खडा देखकर उसन घूघट खीच लिया।

'मैं बबली के स्कूल म हेड मास्टर हू। नमस्ते। बबली कई दिनो स स्कूल आ नही रही है, रूठ रही है शायद। मैं उसे मनाने आया हू। मैं आपको विश्वास दिलाता हू कि स्कूल की ओर से अब कोई शिकायत अपनी बच्ची नही लायगी। और छोटी-मोटी बातो पर आप भी ध्यान मत दिया कीजिए। कल स उसे बराबर पढने भेजिए। बबली के पिताजी शायद यहा नही है। कोई बात नही। मैं उनसे बाद म मिल लूगा। अच्छा, कष्ट दिया आपको।'

दूसरे दिन देखत क्या ह, बबली उसी शहशाही ठाठ से कक्षा मे बैठी है। भावना की गगा राम रोम म फस गई

'बबली पगली।" उनके मुह से निकला। खिल उठे वे। उसे गोद मे उठाया, छाती से लगाया और आफिस म ले आये। अपनी मज पर उसे बिठा कर आप कुर्सी पर बठ गय। देखने लगे उसका मुह सो देखते ही रहे। बबली की टाग हिलन लगी चेहरे पर मुस्कान आन लगी और उसकी भोली भाली आखे उनका चेहरा ताकन लगी। बापू न कितने निकट से बच्चा को देखा था तभी ता कहा था—मेरे भगवान बालको म है। वास्तव म भगवान कितन रूपो म, कितन रगो म हमारे सामने आते हैं।

"अरे बबली तू पगली है।" उन्होंने उसके चेहरे को सहलाकर चूम लिया।

'सर पगले।' अपने मुह से बोल क्या फूटे उनके हृदय मरु म सोता फूट पडा। निहाल हो गये वे। इन अक्षरो को चुनकर हृदय के लिये हार बना लिया उन्होने।

"तू मेरी बिटिया बनगी ?

उसने गदन हिलायी।'

"मुझे जल पिलायगी ?

वह थोडी सी मुस्करायी, फिर मेज से कूद पडी। गिलास भर लाई मटकी से। पानी उन्होने आधा ही पीया होगा कि दायमा जी आये, देखते ही टोका—अर अर हाकम यो कई पाणी बबली।

'मालूम है।'

फेर भी होकम।

हम अध्यापक है अध्यापक के नाम का खाते है। मानवता और राष्ट्रीयता का विकास करना हमारा धम है। अनेकता म एकता लाना हमारा कम है। भीतर के अन्धकार को दूर कीजिए। स्वय से यह काय न हो तो बबली जसी बालिकाओ से सहयोग लीजिए। और मुद्दे की बात सुनिये - हम चाहते हैं कि भारत भारत बन जो जा है वो बन तो इसके लिए सबसे पहल अध्यापक अध्यापक बने। अध्यापक बनन की बात याद रखियेगा दायमा साहब।'

वे उठे। बबली को लेकर कक्षा म जा बैठे। उनको कितनी जगह मोर्चा लेना है। हर मार्चे पर शत्रु प्रबल सना लिए सजग खडा है। मुकाबला हर मोर्चे पर तगडा है। जो प्रश्न उनक सामन पदा हुए हैं और जो उत्तर उनके आते हैं व ही उनकी सेना है। उन उत्तरो पर चलकर ही व शत्रु सेना को परास्त कर सकते हैं।

बबली को छोडकर वापस आफिस म आय। हा तो दायमा साहब, ये जातिया बनी कस ? धधे क आधार पर ही बनी न ? बबली क पिता क्या थे ?

मास्टर थ ?

"फिर तो अपनी ही जाति की हुई बबली। इसकी मा किसानी काम करती है जो आपकी पत्नी करती है। कही कोई फर्क नही। इसको नही मानते तो इसको मानते होगे कि व्यवसाय से जातिया बदलती नही तो फिर हम सब वही हैं जो प्रारम्भ मे थे, तो बबली उसी जाति की हुई जिसके आप हैं। आप इसे भी नही मानते तो फिर आपके मानने का आधार भी कुछ नही। कोरे परम्परा से बधे हुए इन्सान हो आप, ऐसे इन्सान जो अपने लिए भी मस्तिष्क बधा होने के कारण कुछ नही कर पा रहा है, औरो के लिए तो करेगा ही क्या, अर्थात् आप हैं—एक कैदी। क्षमा कीजिएगा।"

अगले दिन उन्होने शिक्षक गोष्ठी का आयोजन रखा और उसमे मुख्य मुख्य बातें सहयोगियो को नोट करवा दी कि इस विद्यालय क्षेत्र से लगने वाले पाचो गावो से और इस गाव से हम मे से प्रत्येक को एक पखवाडे के भीतर कम से कम बीस बालक बालिकाए स्कूल मे लानी है। एक एक गाव एक एक शिक्षक के नाम कर दिया। घर घर मे स्कूल चले की अलख जगानी है। पाठ्य क्रम और गृह कार्य की योजना जो अब तक नही बनी, एक सप्ताह मे अपने अपने विषय की बन जानी चाहिए। आगे से पूरा विद्यालय योजना बद्ध चलेगा। कृपाकर कोई भी शिक्षक पारम्परिक ढग से छात्रो को नही पढायेंगे। बच्चा रोटी की भूख बरदास्त कर सकता है, पर मनुष्योचित व्यवहार की भूख बरदास्त नही कर सकता। रोटी के बिना मर भी जायगा तो किसी को डुबोयगा नही, इसके बिना मरेगा नही मगर कितनो ही को निगल जायगा। सबसे बडी बात हमारे लिए यह कि हम समय पर आये, स्कूल मे भी, कक्षा मे भी, और बीच मे ऐसे वैसे कारणो से लिए उसे छोड नही। कक्षा मे बच्चे लडते झगडते क्यो हैं? उत्तर जानते हैं आप? हमारा कक्षा मे शारीरिक या मानसिक या दोनो से ही उपस्थित नही रहना। इसके लिए डायरी रोज लिखना और पूरी तैयारी के साथ कक्षा मे जाना है। बच्चो को प्यार करना है उनका विश्वास जीतना है। हम अपने प्यारे राष्ट्र के लिए हल्का सा आलोक भी बन पायें और निरा देखकर कुछेक ही सही एक हल्की-सी अगडाई भी ले पाये तो हमारा जीना

ही नीचा देखन लगे कि भावावश म उ हें यह भी ध्यान नही रहा कि व स्कूल मे वठे हैं, इतनी ऊची आवाज नही दनी चाहिए।

ववली चौकडिया भरती हुई बगल म आ खडी हुई, और एक हेड मास्टर पर विजय पान का गव और हप आखो म भरे सबकी आर दखन लगी। ववली उनकी वाहो म समा गई। अपने गाल मे उसके गाल का छूकर उ होने पूछा—पगली विटिया घर क्यो नही गई ? छुट्टी तो कब स ही हो गई। घर कोइ नहीं है क्या ? कहा गई जीजी ?"

"पटेल जी है। उनके खेत पर।"

जौर पापा कहा गये विटिया के ?"

दायमा जी तपाक स जाल —इस गरीब का वाप ता कब से इ मर गया हाकम।

'नही नही नही। उनक मुह से निकला।" अरी ववली सर ने किताबें दी तुझे। कल नइ किताब देंगे नई स्लेट भी। अर वो दख वो सरला विजया रूपा, मोना सब खल रही ह। खेलेगी तू भी ? जा खेल।"

अव उनकी समझ म आ गया था कि उसकी मा पटेल के खेत पर क्यो ग" है। जार उसन फटी फ्राक क्यो पहन रखी है। क्या उसका मुह फूला रहता है और क्या उसके गाल चिडिया का घासला वन हुए ह।

दायमा जी कह रहे थ—वो भी होकम मास्टर थ। रावत भाटा के प्राइमरी इस्कूल म। इस लडकी का जनम वइ हुआ। वइ बड बडे लोगा क लडका के वीच वडी होन लगी। ये वहा इगलिश इस्कूल म पढती थी। इसके एक भाइ और एक वहिन हुइ जो जि दे नहीं रहे। भगवान की मरजी। एक दिन मजूरा मजूरा म झगडा हो गया। लोग घरा म कूद-कद कर लोगो को मारन लग। मरिया म लाठिया स और पत्थरो से। पाच मजूर इसके घर म भी कूद आय। इनस भगवान जान ऐसी कौन सी दुश्मनी थी उन लागा का नालायका की। एक न ववली का पकडकर ट्रक म बद कर दिया। दो न इसके पिता का बाघ दिय। आर एक ने इसकी मा के कपडे उतार दिये।

मैं नई दख सकता।' कहत हैं ऐसा उसका पिता चिल्लाया था। इस

पर उस एक निदइ दुरात्मा ा ' नई देख मकता, तो ले" कहा और सरिया वारी-बारी उसकी आखा म घुसेड दिया। वह एक बार जोर स चीखा और फिर धीरे धीरे चीखने लगा। इसकी मा दो ओर का दुख ले तम्पनी रई। "हराम की बच्ची ! वहा न एक दिन खा के मानूगा ऐसा बोलते हुए उसन कपडे ठीक किये। इस बीच दूसरा ने घर मे जा कुछ था बटोर लिया। अपना काम कर सबके सब शान के साथ घर से निकले। बवली को तो बचाली। पति सुवा मसार छोड गया। तब से सारा दुख समटे मा गरीब पडी है। सुसराल से भाई उधा न जमीन छीन छान कर या ताडदी। या भाइयो की मदद मिल जान से पडी ह।

उनके दिमाग म बवली ऐसी आई कि उनकी तमाम निजी समस्याऐ इस पहाड के पीछे अदश्य हो गइ।

पाच तारीख को 'पे' लान की याद भी दायमा जी न दिलायी। यह भी बताया कि लौटती बार सावधानी बरतनी है। रास्ता खतरनाक है। इस रास्ते पर जगली जानवरो का तो भय है ही टटपूजिए चारा का भी कम नही है, जो हल्की फुल्की रकम के लिए भी मार डालते हैं। उदाहरण भी दिये कि अभी दो माह पूव छत्तीस रुपए के पीछे एक राहगीर को इतना पीटा कि वह वही ढेर हो गया, सुबह तक जानवर उसका नास्ता करके कवाल मात्र रख गय।

रावतभाटा प बक से रुपया लकर व सीधे बाजार गए। दो चड्डी, दो फ्राक एक जर्सी, और रिबन पैक करवाय। रात्रि विश्राम वही किया। सिनेमा के बडे शौकीन सो फिल्म दखी।

प्रात काल वहा से चल पडे। सकुशल गाव आ गए। जान मे जान आ गई।

शाम को खाना एक शादी वाले के यहा था। न्यौता दिन म ही पूरे स्टाफ के लिए आ गया था। यो तो गाव बाले बहुत समझत हैं पर इसम नही समझत कि बच्चा की शादी नही करवानी चाहिए उन्हे पढाना लिखाना चाहिए, उ हे काम का आदमी बनाना चाहिए। थोडी-सी भीड

म भी जिसे पहचाना न जा सक, ऐसा पालन पोषण करन से तो अच्छा है खाना पीना तमाम किसी पत्थर पर चढाते रहे। गाव की सस्कृति के मूल म बठा यह भी एक दद है जो पीडा तो नही पहुचाता, समूचे ग्रामीण समाज का जीण जरूर करता है। इसमे मुक्त होन का उपाय एक ही है—शिक्षा। शिक्षा यदि ईमानदारी से दी जाय तो कुछ ही समय म दद का निदान हो जाए वरना वर्षो बीत जायेंग जीवन बीत जायेंगे, हाय तोबा मचान पर भी दद नही जायगा। शिक्षा ईमानदारी से देन के लिए तो गावो म घुसकर पाठयक्रम बनाया जाय गाव का दिल बनकर स्कूल चलाय जाय। शिक्षा हथियार नही कि अशिक्षा को काट दे। शिक्षा तो सेविका है, जा अशिक्षा की सेवा करके उस शिक्षित बना द। इतना क्या होगा! इसलिए इस सम्बध म बीद क बाप को कुछ कहने स अच्छा है बीद को कुछ भट दा—एकाध रुपया और जीम लो।

भाजनापरात व घर आए। पकेट बगल मे दबाया, टाच हाथ म ली और चल पडे। बिना कही रुके सीधे बबली के घर आय।

बबली! अरी ओ पगली!''

बबली की मा न दरवाजा खाला। पीछे ही उसक वह भी खडी थी।

अरी ओ पगली, छिपकर खडी है तू। आ इधर आ। उन्होंने उस खींचकर गाद म उठा लिया। पकेट उसक हाथ म द दिया।

कसी लगती है बिटिया मरी गाद म, बोलिये।'

मा क्या बालती।

ठीक लगती है न! मैंन इसे गोद म ल लिया है। डरियगा नही, रहगी आपके पास ही।

तब तक मा न पाल म जल रही आग के पास खटिया डाल दी थी। खाट तो बिछ गइ, पर अकेली महिला, बठना उचित नही समझा।

मैं यहा इसलिए भी आया हू कि आपस माफी माग लू—मुझ बबली क पिता क लिए नही पूछना चाहिए था। अनजान म ही सही मैंन आपका दिल ता दुखाया हा है। दायमा साहब से जब मालूम हुआ तो इसान पर

से मरा भरोसा ही जाता रहा। एक प्रार्थना है आपसे। बबली को रोज सुबह घर भेज दिया करना। यह सोयगी आपके पास, खायगी आपके पास बाकी समय मेरे पास रहेगी।"

उसने कोई उत्तर नही दिया। नाक तक घूघट निकाले दीवाल की ओर मुह किये खडी ही रही।

"बबली बिटिया सुबह आना हो घर।" उन्होंने बबली को दुलारा, मा को नमस्कार किया और चल दिए। दो ही कदम चले होंगे कि मा ने बेटी से कहा—"सर से कह चाय पीकर जायेंगे। उनका सुनाकर कहा गया था सो उन्होंने सुन लिया और सुनने से अधिक समझ लिया।

'चाय फिर कभी फिलहाल एक गिलास जल।

बबली अपना पकेट खोलने म मस्त हो गई। मा ही जल लेकर आई। तोडकर रख देने वाले दुख के ज्वर की चोट खाकर उसका शरीर टुकडे टुकडे होने की जगह और निखर आया। उन्हें तो ऐसा ही लगा। यह भी लगा कि दुःख के ज्वार-भाटे ने इसको भीतर से तोड डाला है। अब तो यह एक ऐसा साबुत दाना है जिसको अन्दर से किसी कीडे ने खा लिया है।

बाहर निकलने पर उन्हें ऐसा लगा कि कोई मरम यहा खडा था, जो उनके बाहर आने का एहसास होने ही भाग खडा हुआ है। कुछ लोग उनके पीछे पड हुए हैं, जरा सा सल मिलते ही उन्हें झडे पर चढा दिया जायगा। लेकिन क्या उन्ह इस डर से भयभीत होकर अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से विमुख हो जाना चाहिए। जीवन म पहली बार उन्होंने स्वार्थ से परे कुछ करने की सोची है। वे अपने सोचने की भ्रूण हत्या नहीं कर सकते। आदमी को स्वय से डर लगे ऐसा काम नही करना चाहिए वे ऐसा नही कर रह हैं इसलिए उन्ह निर्भय हो जाना चाहिए। लोग जिस मुस्तदी से अपना काम कर रहे हैं, उन्हे भी उस मुस्तदी से अपना काम करते रहना चाहिए।

बबली पन्द्रह दिन से बराबर उनके घर आ रही है। दिन व दिन गुडिया जैसी उजली निकलती आ रही है चाद जैसी सलौनी होती जा रही

है। बबली की मा को बबली के लिए उसके पिता द्वारा देखा गया सपना शायद याद आ गया और शायद उसे साकार करने के लिए उसने संकल्प ले लिया है।

उन्होंने आरम्भ से ही सोच लिया था कि वे बबली को अपनी ही विधि से पढ़ायेंगे। कक्षा में बबली लड़ती क्या है, इसका उत्तर बबली ने दिया कि एक दिन मास्टर साहब ने भीलनी कह दिया। सब लड़के भी उसको जब तब भीलनी कह देते हैं और इस पर उसे गुस्सा आजाता है। यह बात उन्हें बुरी तरह अखरी और उन्होंने इस पर खास ध्यान दिया कि विद्यालय में इसकी पुनरावृत्ति किसी भी विद्यार्थी के साथ न होने पाय। यह देश जन धन से सम्पन्न है, दीन है तो केवल नैतिकता में, और इसलिए आय की कमी लगती है, तो धन की भी और जन जिसको कहना चाहिए उसकी भी कमी है। नैतिकता ही राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता है और इसकी जोत व बबली में जगायेंगे। नैतिकता की खेती के लिए खेत वे बबली को ही बनायेंगे। किसान अन्न धन की खेती जिस तरह करते हैं विद्यालय उसी तरह नैतिकता की खेती करें या दाना ओर से दरिद्रता की सेना गिरकर भाग छूटेगी। फिर राष्ट्र में खुशहाली कैसे नहीं आयगी।

उन्होंने इतिहास पुराण की कहानियों में से उन कहानियों को चुना, जिनके पात्र राष्ट्र के लिए समर्पित हो गए मानवता के लिए अर्पित हो गए। पन्द्रह दिन की लगातार कोशिश में एक अच्छा सा कहानी संग्रह तयार हो गया। अब वे एक कहानी प्रतिदिन प्रार्थना-स्थल पर छात्रों को सुनाने लगे। बबली के पास चूंकि समय अधिक मिलने से वे उसे कहानी भी सुनाते थे, और उस पर प्रश्न भी करते थे।

वे बबली के गुरु थे और बबली उनकी गुरु थी। बबली के कारण उनके जीवन में नियमितता आ गई। उनकी चाय जैसी आदत भी छूट गई। फिल्मी पत्रिकाएं पढ़ने के शौक ने गांधी विचारधारा साहित्य और पत्रिकाओं में कल्याण, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, और दिनमान ले लिया। अकेले होने के कारण अफीमचियों चिलमचियों और गंदी बातें करने वालों में समय

बिताया करते थे, सा सब छूट गए। जैसे बबली ही उनकी चिंता हा गई निनचया हा गई, जिन्दगी हा गई। गुरु तब बनता है जब वह शिष्य को गुरु मानता है। फूल खुशबू के कारण ही फूल है। इस तरह व बबली से और बबली उनस, दोना एक दूसर से बनन लगे, सवरन लगे। यो शिक्षक छात्र का गुरु बन जाय और छात्र को अपना गुरू बना ले ता नैतिकता का वातावरण स्वत ही बन जाए।

अच्छी आदतें और शिष्टाचार बबली म अपन आप आन लगे। साथ रहने स और शिक्षक के लिए मिले हर अवसर को दखन की सूक्ष्म दष्टि हान से उन्हान बबली का भूगोल सम्बन्धी सामाजिक ज्ञान सम्ब धी माटी माटी बाता का ज्ञान करा दिया। बाघ समभान के लिए वे उसे एक दिन राणा प्रताप सागर बाघ ले गय। वही उसने चप्पल के लिए कहा सो उसे चप्पल भी दिला लाये।

बबली पर अब तक चालीस-बयालीस रुपए खच हा गए थे। एक ओछाई है ऐसा हिसाब रखना। पर एक छोटी सी तनखा का लम्बा ता नहा किया जा सकता ! खच ही तो घटा सकत हैं। और खच एक जगह बढ जाता है तो हिसाब इसलिए रखना पडता है कि कितना खच दूसरी जगह घटाया जाय। उन्हान अपना दूध बद कर दिया। दूध मे क्या है— कोरा पानी, इससे तो पानी पीना ही ठीक है।

व्यायाम का शौक उन्हे सोलह साल की उम्र म लगा सो अब अडतालीस साल की उम्र तक चला आ रहा था। अब कसरत के बाद व चन खाया करेंगे। थोडा गुड भी ले लिया करेंगे। चन दूध का विकल्प, आज के दूध के उस्ताद ! एक दिन पहल के भीगे हुए चना को अकुरित होन पर खायगे मजा आ जायेगा। घर भी तो वे दूध नही होने पर चन खाया करते हैं।

उन्हे घर की याद आ गई। एक पूरा पखवाडा होगया—घर से आये। माँ का सर्दी बढन पर दम चलता है। इधर मा का दम बढता है, उधर पिता का दम निकलने जैसा हा जाता है। बच्चो को भी दख आयेंगे अ।

"मेरी पगली बिटिया, कसी रही तू ?"

'सर को याद करती रही !" आज हल्के स्वर म मगर सीधी बता की मान।

'अरी पगली बबली !" उठाकर चूम लिया उसको।

कम है आप ?" आप दरअसल पूजा के याग्य ह। आप एक एसी महिला है जिसन अपन यौवन को अपन मातृत्व पर न्योछावर कर दिया। जब भी कोइ नारी अथवा पुरुष आपको जानगा, आपकी पूजा करगा। आप चाहती तो कब से ही अपना नया घर बसा लेती। पर आपन अपनी चाह को कभी अपन पर हावी नही होन दिया। मैं कह सकता हू—आपको देखकर कि सीता सावित्री अभी भी इस देश म है।"

वह रोन लगी थी।

'मेरी एक प्रार्थना और मानिये। बबली को अपन ही जसी बनाइये। धीर, निर्भीक, सहनशील, सद्चरित्र और ज्ञानी। अपन आसूओ से उसे मलिन मन होने दीजिय। मेरी एक बहन थी शान्ता। बचपन मे खूब साथ खेलते थ हम, खूब छेडते थे एक दूसरे को खूब रोते रुलाते थे। जुदाइ कतई बर्दाश्त नही थी। मैं स्कूल के साथ रणकपुर घूमन जान की तयारी करने लगा, उसन सामान तितर बितर कर दिया। मना कर दिया कि वह नही जाने देगी। मैं चला गया। वापस आया—एक सप्ताह बाद। आते ही पूछा-शान्ता कहा है ? उत्तर म मा न चीख मार दी, पिता सुबक उठ। तब से मैं उस खोज रहा हू। आज मिल गई है वह आज मिल गइ है।"

और उन उनकी शान्ता न कामन के लिए होठ खोले ही थ कि वे मुह मे रुमाल दबाकर दरवाजा पार कर गय। नही जाते तो बाध तोडकर उमडी गगा जमुना म वे जान कब तक डूबे रहन।

सहयोगियो ने कुछ भी जोश नही दिखाया। वे यह अच्छी तरह जान गय कि वे मत्र स्कूल का सुझाया काय करन के बजाय, उनके कमजोर बिन्दु खोजन म लगे रहन है ताकि काम के लिए कहते या दबाने वक्त कमजोरिया उनकी रक्षा भी करें और वे दबाये भी जा सक। फिर भी

उन्होंने छः बालकों को विद्यालय में लाने के लिए सबकी सराहना की। और स्वयं ही काम से लग गये।

उन्होंने अपने लिए एक पखवाड़े की योजना बनाई। आस पास के छः गांवों में जाना, स्थानीय गांव में घूमना, और कैसे भी जोड़ तोड़ मिलाकर एक सौ बालकों को विद्यालय में लाना। एक रजिस्टर उन्होंने इसके लिए खोला और कुछ कालम बनाये—नाम बालक/बालिका, अभिभावक का नाम, अभिभावक से भेंट का दिन, बच्चे को स्कूल में नहीं रखने का कारण, स्कूल में कब रख रहे है, किस समय रखना चाहते है स्कूल के लिए कोई सुझाव।

गांव में सुबह शाम ही जाना होता। दिन में स्कूल भी चलता और गांव में भी कोई नहीं मिलता। इस पखवाड़े में वे इतने ज्यादा व्यस्त हो गये कि खाना पीना भी पूरा नहीं होता। एक दिन तो चपरासी भी तरस खा गया और कहने लगा कि वह उनके लिए खाना बनाकर रख सकता है, मगर उन्होंने उसे पहले ही मना कर दिया कि प्रथम तो अपना निजी कार्य किसी व्यक्ति से करवा उसे पुरस्कार न देना, मानवीय सिद्धान्त के विरुद्ध है, दूसरा—एक 'पार्टटाइम' से जिसे केवल ढाई रुपया प्रतिदिन दिया जाता है, विद्यालय के पानी सफाई के अलावा कुछ भी काम लेना आर्थिक सिद्धान्त के प्रतिकूल है। इस पर चपरासी मुंह फुलाकर क्या चला गया, उनकी समझ में नहीं आया।

भ्रमण के दौरान उन्हें अभिभावकों से जो सुनने को मिला, उसका सार था—मास्टर स्कूल में पढ़ाते नहीं टोकते नहीं गालियां देते हैं, डराते धमकाते और मारते है। बीड़ी सिगरेट पीना भी उनके बच्चे उन्हीं से सीख रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि बनती कोशिश आपकी सारी शिकायतों को वे दूर करेंगे।

दो-दो और तीन तीन बार वे एक एक के घर गए। बराबर पीछा करते रहे। प्रयास रंग लाने लगा, और भगवान को उन्होंने उस दिन लाख लाख धन्यवाद दिया, जिस दिन पूरे सौ बालक विद्यालय में नए प्रविष्ठ

हो गये।

जसे ही सौ बालको को विद्यालय म लान का उनका लक्ष्य पूरा हुआ, उन्होने उन्हें विद्यालय म रोकने का एक और काम किया—समय विभाग-चक्र म परिवतन करन का। पूरी अविलम्ब इकाई के चार वग बनाये—इकाइ एक स दो प्रथम, इकाई तीन स चार द्वितीय, इकाई पाच स आठ ततीय और इकाई नौ स अठारह चतुथ। प्रत्येक वग मे औसत तीस विद्यार्थी आए। एक वग एक शिक्षक के जिम्म कर दिया।

प्रत्यक प्रभारी शिक्षक विद्यार्थी का प्रगति अभिलेख रखेगा। छात्र के प्रगति नही करन क कारण खोजेगा और उनका निराकरण करेगा। छात्र अनुपस्थित रहता है तो क्या, कारण लिखे, और उन कारणो का निराकरण शिक्षक ने क्या किया, इन सबका रिकाड एक रजिस्टर म रखें और इसकी जानकारी माह मे एक बार प्रत्येक अभिभावक को मिले, उससे टिप्पणी लें कि स्कूल और उसके बालक के प्रति उसके क्या विचार बन रह है।

विद्यालय समाज एक शरीर के दो अग है—सर और धड। समाज की समस्या मूलत विद्यालय की समस्या है। विद्यालय इन समस्याओ स निपट रहा है तो समझना चाहिए विद्यालय समाज का अभिन्न अग बना हुआ है अन्यथा सर धड से अलग है। दोनो म जीवन नाम का कोई तत्व नही। जीवन जसे जल, मल धोता है, प्राण दता है, ऐसा कुछ भी उनम नही। इसलिए मैल है, प्राण लेवा है दानो के लिए। सब कामो म जोडने के काम को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह काम हो गया तो दूसर काम भी हो गये समझो। इस बात स उन्हे स तोप होन लगा कि उनके द्वारा इस ओर प्रयास हो रहा है।

वग दो, इकाई तीन से चार के प्रभारी वे स्वय रहे। ताकि कल को कोई यह नही कहे कि काम वे करते नही, केवल बतान म रहते हैं अर्थात हुकूमत करत हैं। फिर अच्छा काम पहले घर से शुरू करना चाहिए।

एक अध्यापक की कमी के कारण प्रथम दो पीरियड तक चार वग रहत थे, और चारो म हिन्दी चलती थी। आगे के दो क्लासो म तीन वग

उन्होंने छ बालकों को विद्यालय म लाने के लिए सबकी सराहना की। और स्वय ही काम से लग गये।

उन्होंने अपने लिए एक पखवाडे की योजना बनाई। आस पास के छ गावों म जाना स्थानीय गाव म घूमना और कसे भी जोड तोड मिलाकर एक सौ बालकों को विद्यालय म लाना। एक रजिस्टर उन्होंने इसके लिए खोला और कुछ कालम बनाये—नाम बालक/बालिका अभिभावक का नाम, अभिभावक से भेंट का दिन बच्चे को स्कूल म नहीं रखने का कारण स्कूल मे कब रख रहे है किस समय रखना चाहते है, स्कूल के लिए कोई सुझाव।

गाव म सुबह शाम ही जाना होता। दिन म स्कूल भी चलना और गाव म भी कोई नही मिलता। इस पखवाडे म वे इतने ज्यादा व्यस्त हो गये कि खाना पीना भी पूरा नही होता। एक दिन तो चपरासी भी तरस खा गया और कहने लगा कि वह उनके लिए खाना बनाकर रख सकता है, मगर उन्होंने उसे पहले ही मना कर दिया कि प्रथम तो अपना निजी काय किसी व्यक्ति से करवा उसे पुरस्कार न देना, मानवीय सिद्धान्त के विरुद्ध है, दूसरा—एक 'पाटटाइम' स जिसे केवल ढाइ रुपया प्रतिदिन दिया जाता है, विद्यालय के पानी सफाई के अलावा कुछ भी काम लेना आर्थिक सिद्धान्त के प्रतिकूल है। इस पर चपरासी मुह फुलाकर क्या चला गया उनकी समझ म नहीं आया।

भ्रमण के दौरान उन्हें अभिभावकों स जो सुनने को मिला, उसका सार था—मास्टर स्कूल म पढाते नहीं टोकते नहीं गालियां देते हैं डराते धमकाते और मारते है। बीडी सिगरट पीना भी उनके बच्चे उन्हीं से सीख रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि बनती कोशिश आपकी सारी शिकायतो का वे दूर करेंगे।

दो दो और तीन तीन बार वे एक एक के घर गए। बराबर पीछा करते रहे। प्रयास रग लाने लगा और भगवान को उन्होंने उस दिन लाख लाख धन्यवाद दिया, जिस दिन पूरे सौ बालक विद्यालय म नए प्रविष्ठ

हो गये।

जस ही सौ बालकों को विद्यालय म लान का उनका लक्ष्य पूरा हुआ, उन्होने उन्ह विद्यालय मे रोकन का एक और काम किया—समय विभाग-चक्र म परिवतन करने का। पूरी अविलम्ब इकाई के चार वग बनाये—इकाई एक स दो प्रथम, इकाई तीन मे चार द्वितीय, इकाई पाच स आठ ततीय और इकाई नौ से अठारह चतुथ। प्रत्येक वग म औसत तीस विद्यार्थी आए। एक वग एक शिक्षक के जिम्मे कर दिया।

प्रत्येक प्रभारी शिक्षक विद्यार्थी का प्रगति अभिलेख रखेगा। छात्र के प्रगति नही करन के कारण खोजेगा और उनका निराकरण करेगा। छात्र अनुपस्थित रहता है तो क्या, कारण लिखे, और उन कारणो का निराकरण शिक्षक ने क्या किया, इन सबका रिकाड एक रजिस्टर म रखें और इसकी जानकारी माह मे एक बार प्रत्येक अभिभावक को मिले, उससे टिप्पणी लें कि स्कूल और उसक बालक के प्रति उसके क्या विचार बन रह है।

विद्यालय समाज एक शरीर के दो अग है—सर और धड। समाज की समस्या मूलत विद्यालय की समस्या है। विद्यालय इन समस्याओ स निपट रहा है तो समझना चाहिए, विद्यालय समाज का अभिन्न अग बना हुआ है, अन्यथा सर धड से अलग है। दोनो म जीवन नाम का कोई तत्व नही। जीवन जैस जल, मैल धोता है, प्राण देता है, एसा कुछ भी उनम नही। इसलिए मैल है, प्राण लेवा है दानो के लिए। सब कामो म जोडन के काम को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह काम हो गया तो दूसरे काम भी हो गये समझो। इस बात से उन्ह सन्तोष होने लगा कि उनके द्वारा इस ओर प्रयास हो रहा है।

वग दो, इकाई तीन से चार के प्रभारी वे स्वय रहे। ताकि कल को कोई यह नही कहे कि काम वे करते नही केवल बतान म रहते है अर्थात हुकूमत करते हैं। फिर अच्छा काम पहले घर से शुरू करना चाहिए।

एक अध्यापक की कमी के कारण प्रथम दो पीरियड तक चार वग रहते थे, और चारो मे हिन्दी चलती थी। आगे के दो क्लासो मे तीन वग

उन्होंने छः बालकों को विद्यालय में लाने के लिए सबकी सराहना की। और स्वयं ही काम में लग गये।

उन्होंने अपने लिए एक पखवाड़े की योजना बनाई। आस पास के छः गावों में जाना, स्थानीय गांव में घूमना, और कैसे भी जोड़ तोड़ मिलाकर एक सौ बालकों को विद्यालय में लाना। एक रजिस्टर उन्होंने इसके लिए खोला और कुछ कालम बनाये—नाम बालक/बालिका, अभिभावक का नाम, अभिभावक से भेंट का दिन, बच्चे को स्कूल में नहीं रखने का कारण, स्कूल में कब रख रहे हैं, किस समय रखना चाहते हैं, स्कूल के लिए कोई सुझाव।

गांव में सुबह शाम ही जाना होता। दिन में स्कूल भी चलता और गांव में भी कोई नहीं मिलता। इस पखवाड़े में वे इतने ज्यादा व्यस्त हो गये कि खाना पीना भी पूरा नहीं होता। एक दिन तो चपरासी भी तरस खा गया और कहने लगा कि वह उनके लिए खाना बनाकर रख सकता है मगर उन्होंने उसे पहले ही मना कर दिया कि प्रथम तो अपना निजी कार्य किसी व्यक्ति से करवा उसे पुरस्कार न देना, मानवीय सिद्धान्त के विरुद्ध है, दूसरा—एक 'पार्टटाइम' से जिसे केवल ढाई रुपया प्रतिदिन दिया जाता है, विद्यालय के पानी सफाई के अलावा कुछ भी काम लेना आर्थिक सिद्धान्त के प्रतिकूल है। इस पर चपरासी मुंह फुलाकर क्या चला गया, उनकी समझ में नहीं आया।

भ्रमण के दौरान उन्हें अभिभावकों से जो सुनने को मिला, उसका सार था—मास्टर स्कूल में पढ़ाते नहीं, टोकते नहीं, गालियां देते हैं, डराते धमकाते और मारते हैं। बीड़ी सिगरेट पीना भी उनके बच्चे ... रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि बनती ... शिकायतों को वे दूर करेंगे।

दो-दो और तीन तीन बार वे एक एक के घर ... करते रहे। प्रयास रंग लाने लगा और भगवान को ... साथ धन्यवाद दिया, जिस दिन पूरे सौ बालक ...

हो गये।

जस ही सौ बालकों को विद्यालय म लाने का उनका लक्ष्य पूरा हुआ उन्होंने उन्हें विद्यालय में रोकने का एक और काम किया—समय विभाग-चक्र म परिवतन करने का। पूरी अविलम्ब इकाई के चार वग बनाये—इकाई एक से दो प्रथम, इकाइ तीन स चार द्वितीय, इकाई पाच स आठ तृतीय और इकाई नौ स अठारह चतुथ। प्रत्येक वग म औसत तीस विद्यार्थी आए। एक वग एक शिक्षक के जिम्मे कर दिया।

प्रत्येक प्रभारी शिक्षक विद्यार्थी का प्रगति अभिलेख रखेगा। छात्र के प्रगति नही करने के कारण खोजेगा और उनका निराकरण करेगा। छात्र अनुपस्थित रहता है तो क्या, कारण लिखे, और उन कारणों का निराकरण शिक्षक ने क्या किया, इन सबका रिकाड एक रजिस्टर म रखें और इसकी जानकारी माह मे एक बार प्रत्येक अभिभावक को मिले, उससे टिप्पणी लें कि स्कूल और उसके बालक के प्रति उसके क्या विचार बन रह है।

विद्यालय समाज एक शरीर के दो अग हैं—सर और धड। समाज की समस्या मूलत विद्यालय की समस्या है। विद्यालय इन समस्याओं से निपट रहा है तो समझना चाहिए, विद्यालय समाज का अभिन्न अग बना हुआ है, अन्यथा सर धड से अलग है। दोनों म जीवन नाम का कोई तत्व नही। जीवन जैसे जल, मैल धोता है, प्राण देता है, ऐसा कुछ भी उनम नहीं। इसलिए मैले है, प्राण लेवा है दोनो के लिए। सब कामों मे जोडन के काम को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह काम हो गया तो दूसरे काम भी हो गये समझो। इस बात स उन्हें स तोष होने लगा कि उनके द्वारा इस ओर प्रयास हो रहा है।

वग दो, इकाई तीन से चार के प्रभारी वे स्वय रहे। ताकि कल को कोई यह नही कह कि काम वे करते नहीं, केवल बताने मे रहते है अथात हुकूमत करते हैं। फिर अच्छा काम पहले घर स शुरू करना चाहिए।

एक अध्यापक की कमी के कारण प्रथम दो पीरियड तक चार वग रहते थे, और चारो म हिन्दी चलती थी। आगे के दो क्लासो मे तीन वग

उन्होंने छ बालकों को विद्यालय में लाने के लिए सबकी सराहना की। और स्वयं ही काम में लग गये।

उन्होंने अपने लिए एक पखवाड़े की योजना बनाई। आस पास के छ गावों में जाना स्थानीय गाव में घूमना और कैसे भी जोड़ तोड़ मिलाकर एक सौ बालकों को विद्यालय में लाना। एक रजिस्टर उन्होंने इसके लिए खोला और कुछ कालम बनाये—नाम बालक/बालिका अभिभावक का नाम अभिभावक से भेंट का दिन बच्चे को स्कूल में नहीं रखने का कारण, स्कूल में कब रख रहे हैं किस समय रखना चाहते हैं, स्कूल के लिए कोई सुझाव।

गाव में सुबह शाम ही जाना होता। दिन में स्कूल भी चलना और गाव में भी कोई नहीं मिलता। इस पखवाड़े में वे इतने ज्यादा व्यस्त हो गये कि खाना पीना भी पूरा नहीं होता। एक दिन तो चपरासी भी तरस खा गया और कहने लगा कि वह उनके लिए खाना बनाकर रख सकता है, मगर उन्होंने उसे पहले ही मना कर दिया कि प्रथम तो अपना निजी कार्य किसी व्यक्ति से करवा उसे पुरस्कार न देना, मानवीय सिद्धान्त के विरुद्ध है, दूसरा—एक 'पार्टटाइम' से जिसे केवल ढाई रुपया प्रतिदिन दिया जाता है, विद्यालय के पानी सफाई के अलावा कुछ भी काम लेना आर्थिक सिद्धान्त के प्रतिकूल है। इस पर चपरासी मुह फुलाकर क्या चला गया, उनकी समय में नहीं आया।

भ्रमण के दौरान उन्हें अभिभावकों से जो सुनने को मिला, उसका सार था—मास्टर स्कूल में पढाते नहीं, टोकते नहीं गालिया देते हैं, डराते धमकाते और मारते हैं। बीडी सिगरेट पीना भी उनके बच्चे उन्हीं से सीख रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि बनती कोशिश आपकी सारी शिकायतों को वे दूर करेंगे।

दो दो और तीन तीन बार वे एक एक के घर गए। बराबर पीछा करते रहे। प्रयास रंग लाने लगा और भगवान को उन्होंने उस दिन लाख लाख धन्यवाद दिया, जिस दिन पूरे सौ बालक विद्यालय में नए प्रविष्ठ

हो गये।

जैसे ही सौ बालकों को विद्यालय म लाने का उनका लक्ष्य पूरा हुआ, उन्होंने उन्हें विद्यालय म रोकने का एक और काम किया—समय विभाग-चक्र म परिवतन करने का। पूरी अविलम्ब इकाई के चार वग बनाये—इकाई एक से दो प्रथम, इकाई तीन स चार द्वितीय, इकाई पाच स आठ ततीय और इकाई नौ स अठारह चतुथ। प्रत्येक वग मे औसत तीस विद्यार्थी आए। एक वग एक शिक्षक के जिम्मे कर दिया।

प्रत्येक प्रभारी शिक्षक विद्यार्थी का प्रगति अभिलेख रखेगा। छात्र के प्रगति नही करने के कारण खोजेगा और उनका निराकरण करेगा। छात्र अनुपस्थित रहता है तो क्या, कारण लिखे, और उन कारणो का निराकरण शिक्षक ने क्या किया इन सबका रिकाड एक रजिस्टर म रखें और इसकी जानकारी माह मे एक बार प्रत्येक अभिभावक को मिले, उससे टिप्पणी लें कि स्कूल और उसके बालक के प्रति उसके क्या विचार बन रहे है।

विद्यालय समाज एक शरीर के दो अग है—सर और धड। समाज की समस्या मूलत विद्यालय की समस्या है। विद्यालय इन समस्याओं स निपट रहा है तो समझना चाहिए, विद्यालय समाज का अभिन्न अग बना हुआ है, अन्यथा सर धड से अलग है। दोनो म जीवन नाम का कोई तत्व नही। जीवन जसे जल, मैल धोता है, प्राण देता है ऐसा कुछ भी उनमे नही। इसलिए मैले है, प्राण लेवा है दोनो के लिए। सब कामो म जोडने के काम को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। यह काम हो गया तो दूसरे काम भी हो गये समझो। इस बात स उन्हें स तोष होने लगा कि उनके द्वारा इस ओर प्रयास हो रहा है।

वग दो, इकाई तीन से चार के प्रभारी वे स्वय रहे। ताकि कल को कोई यह नही कह कि काम वे करते नही, केवल बताते म रहते हैं अर्थात हुकूमत करते हैं। फिर अच्छा काम पहले घर से शुरू करना चाहिए।

एक अध्यापक की कमी के कारण प्रथम दो पीरियड तक चार वग रहते थे, और चारो मे हिन्दी चलती थी। आगे के दो क्लासो मे तीन वग

हो जाते थे और गणित चलती थी। पाचवे और छटे क्लासो म चारो वग एक साथ बठते थ और सामाजिक अध्ययन और सामान्य विज्ञान पढते थ। प्रथम दो क्लासो म चार शिक्षको और फिर दो क्लासो म तीन शिक्षको के व्यस्त रहने से इस समय अन्य कक्षाओ मे कार्यानुभव शारीरिक शिक्षा एव खेल, क्रियात्मक प्रवृत्तिया, चित्रकला और एक तथा किसी कक्षा म दो मुख्य विषय चलते थे।

और इस शैक्षिक उन्नयन म रुके पानी पर दूसरा प्रहार किया उन्होंने अभिभावको को प्रेरित करके। अभिभावक सम्मेलन म अभिभावको की उपस्थिति नगण्य रही तो उन्होंने देख लिया कि समय आ गया है—कुए को प्यास के पास जाना चाहिए। वे प्रत्येक अभिभावक से मिलकर उसे समझा आये कि स्कूल से आने पर बालक से पूछे कि आज उनकी कक्षा म कौन कौन से अध्यापक आये किसने क्या पढाया किसने उसका काम देखा। यदि बालक के उत्तर असतोषजनक हो तो दूसरे दिन वह उस अध्यापक से सीधी बातचीत करे और यो दो एक बार समझाने पर भी ढग से पढाये लिखाये नही तो उस शिक्षक विशेष को हर अमावस्या पर गाव वालो को एकत्रित कर उनके बीच खडा करे।

कुछ ही समय म विद्यालय ऐसा जम गया कि विद्यालय विद्यालय लगने लगा शान्ति निकेतन बन गया हो जसे। अभिभावक समिति को एक अधिकार दिया गया कि बिना किसी प्रकार की बाधा पहुचाये, प्रभाव डाले सप्ताह मे एक बार विद्यालय का रचनात्मक निरीक्षण प्रधान द्वारा हो, व माह म एक बार अमावस्या की किसानी छुट्टी पर पूरी समिति द्वारा निरीक्षण हो। स्कूल की कमिया व आवश्यक सुझाव प्रधानाध्यापक को नोट करवायें। अगली अमावस्या को यह भी देखें कि गत माह नोट करवाइ कमिया कहा तक दूर हुई है। इधर प्रधानाध्यापक समाज से सम्बन्धित समस्याओ को उनके सामने रखे और इस मासिक बठक म मिल बैठकर दोनो पक्ष उनका निदान खोजें इसे करने का सतत् प्रयास करें। इससे दोहरा लाभ हुआ—एक तो शिक्षण सम्बन्धी कमजोरिया दूर होने लगी,

दूसरी अभिभावका सम्ब धी शिकायतें दूर होन लगी। सब ओर स्कूल अपना है समाज अपना है, इस अपनेपन की भावना फैलने लगी। गाव वालो की दष्टि विद्यालय भवन की ओर होने लगी, और तीसर ही माह मे टूट चुके दरवाजे, खिडकिया की मरम्मत हो गई। फश ठीक हान के लिए सीमट आ गई, रत आगई कारीगर का प्रब ध हो गया। कमरा बनन के लिए दस ट्रक पत्थर पड गए।

अध्यापक बहुत व्यस्त हो गये। वे कहते थ—नही, हम सिफ अपना काय करन लग गये। मासिक-बैठक म इमी बात को लकर बहस छिड गई। दायमा जी ऐसे बोल रहे थ जस शेप मत्र अध्यापका न उनको अपना 'नीडर' बना लिया हा।

'टाइम टेबल तो होकम आपको बदलना इ पडेगा।'

"और नहीं बदनें तो ?"

"तो यह होगा कि मैं आफिस का काम नई करूगा। श्याम जी परी ा की नई करेंगे।"

"क्या ?'

'काम करन का टाइम नही मिलता।"

"साडे चार स पाच बजे तक आपका क्ही इसलिए नही लगा रखा है कि आप अपना वह काय करें।"

एसी बात है होकम आप ई कितना करलो कोई सोने के कडे नही पहनायेगा।"

' दायमा साहब। आपके पास मास्टर डिग्री है, एजुकेशन डिग्री है। प्रमोशन आपका ड्यू है। पके पकाए हैं आप, तप तपाये सूरज या अनानता के मेघा म कहा छिपे जा रहे ह आप।'

ह ट साहब स्कूल ठीक दिखना ही हो साहब तो है हें स्कूल सजाने का काम करें। पसा नही है तो च दा करें। हें हें साहब कितना पैसा चाहिए मैं च दा करके लाता हू। स्कूल टीपटाप हो जाएगा। आने वाला भी साहब हें हें, खुश हा जायगा।

"ऐसा है गुरुदव ! स्कूल शिक्षक का शरीर है। शरीर को खूब अच्छे साबुन से नहलाओ खूब अच्छे वस्त्र पहनाओ, और आहार पूरा न हो तो बताओ उसका क्या हस्र होगा ? शरीर पर फोडा होगया है उसका इलाज न कराओ उल्टे अच्छे वस्त्रो से उस ढककर ससार की आखो म चकाचाध पैदा कर दो, इधर वह फोडा अपना काय करगा और पूरे शरीर म विष फैला देगा, तब यह सजावट धरी रह जायगी और शरीर चला जायगा। स्कूल मे भी अशिक्षा क फोडे को छिपान के लिए सजावट और टीमटाम का आश्रय लिया गया तो निश्चय ही एक दिन स्कूल नही रहेंगे। मूल समस्या पर प्रहार न करन का अथ है—अपने हाथो स्कूल की जडें खाद कर उसम तल डालना। इसलिए मैं इस किसी भी ऐंगल मे ठीक नही समझता। हम स्कूल को गाधी की एक लगोटी पहना दें, इसे उसी की तरह जीण शीण बना दें परवाह नही, मगर जसे *गाधी गाधी बन गया,* वैस स्कूल को स्कूल बनने दें।

क्या आप यह बर्दास्त कर सकेंगे कि आपका बालक सजा धजा तो खूब दीखे पर मनुष्योचित व्यवहार में शून्य हो ? इस फैशन भ्राति ने मनुष्य समाज की जो दुगति की है वह स्कूल म आकर स्कूल को भी माफ नही करेगी। हम अपन लिए भी वैचारिक क्राति स्वीकार करें और स्कूल क लिए तो करें ही।

"मुझे तो होकम डर है आप हैडमास्टरी मे फेल न हो जाओ। ये अभिभावक समिति वाल होकम आपको फेल कर देंग।

'आप जो कहना चाह रहे हैं म समझ रहा हू। पर आप भी थोडा समझिए कि व्यक्ति को स्वय द्वारा नियत्रित होन के लिए प्रकृति पर्याप्त समय दती है नही होन पर दूसरा शक्ति को नियन्त्रित करन के लिए उसकी प्रकृति द्वारा ही निमन्त्रण मिलता है। आपको पहल भी कहा था अब भी कह रहा हू—आप कवल अपना काम कीजिए। शिक्षक कवल शिक्षक का काम करे। वह दास नही है कि जी हजूरी करे, स्कूल का समय खराब कर अधिकारियो की अदली करता फिरे। वह शिक्षक है, गुरु है,

छात्र का भी, समाज का भी अपने पराए अधिकारियों का भी। जिस देश के शिक्षक अपना मूल काय छोडकर दूसरे कामो मे चित्त लगाने फिरते है, वह देश निश्चित रूप से अपनी पटरी छोडकर सहायता के लिए दूसरों की ओर बाह फैलाए रहता है। और जो अधिकारी इस काय म उनको बल प्रदान करते हैं, वे राष्ट्र की राह म गड्ढे खोदने का काम करते हैं जिनम निश्चित रूप से उनके गिरने की बारी भी आयेगी।

सब शान्त हो गए पर उन्होंने देख लिया कि सहयोगियों के मूत हुए विरोध का अब उन्हें सामना जरूर करना पडेगा। वे यह भी जान गए कि इस पूरे स्टाफ के तालाब को गदा करने वाली सिफ एक मछली है। इस मछली का अन्तत्र पहुचाने से हिंसक वातावरण बन जायगा। एक मछली तालाब को गदा कर सकती है तो एक इसान उसे स्वच्छ भी कर सकता है यही अहिंसा का, सुधार का रास्ता है। अत उन्होंने दायमा जी के स्थानान्तर के लिए आगे लिखने के बजाय अपने काय की ओर ही ध्यान देने की सोची। सोच उन्होंने यह भी लिया कि कुछ भी हो जाए वे किसी के लिए कलम को तलवार बनाने की व्यथ परेशानी मे नही पडेंगे। इससे उनकी ही काय क्षमता गिर जायगी, बौद्धिक ह्रास होगा सो अलग।

बबली आती तो हमेशा पर आज जरा जल्दी आ गई। उनकी कसरत चल रही थी लगोट म। एक बार तो वे लजा गये, आखिर लडकी है, पर लडकी अभी ऐसी कि अभी उसको अपना लडकी होने का भी पूरा ज्ञान नही। उनका काम चलता रहा। बबली कोने म खडी उन्हें देखती रही, व बबली को देखते रहे।

एकाएक उनके दिमाग मे एक विचार कौंधा कि बबली अच्छी दौडाक बन सकती है। उन्हें लगा जैसे वह उनके पीछे दौड रही है उनके बराबर दौड रही है, अब आगे दौड रही है। बबली बडी हो गई है, दौडने म इतनी तेज हो गई है कि कोई भी प्रतिस्पर्धी उसके आगे नहीं निकल पा रहा है। दौड की गति बढ रही है। बबली बढ रही है दौड की गति बढ रही है। वह स्टेट पर दौडने जा रही है, आशीर्वाद ले रही है उनसे। बबली दौड

'ऐसा है गुरुदव ! स्कूल शिक्षक का शरीर है। शरीर को खूब अच्छे साबुन से नहलाओ, खूब अच्छे वस्त्र पहनाओ, और आहार पूरा न हो तो बताओ उसका क्या हस्र होगा ? शरीर पर फोडा होगया है, उसका इलाज न कराओ उल्टे अच्छे वस्त्रो से उसे ढक कर ससार की आखो म चकाचौध पदा कर दो, इधर वह फोडा अपना काय करेगा और पूरे शरीर मे विष फैला देगा, तब यह सजावट धरी रह जायगी और शरीर चला जायगा। स्कूल मे भी अशिक्षा के फोडे को छिपाने के लिए सजावट और टीमटाम का आश्रय लिया गया तो निश्चय ही एक दिन स्कूल नही रहेंगे। मूल समस्या पर प्रहार न करने का अथ है—अपने हाथो स्कूल की जड खोद कर उसम तल डालना। इसलिए मैं इस किसी भी एगल से ठीक नहा समझता। हम स्कूल का गाधी की एक लगोटी पहना दें, इसे उसी की तरह जीण शीण बना दें परवाह नही, मगर जसे गाधी गाधी बन गया वैस स्कूल को स्कूल बनने दें।

क्या आप यह बर्दास्त कर सकेंगे कि आपका बालक सजा धजा तो खूब दीख पर मनुष्योचित व्यवहार से शून्य हो ? इस फेशन क्राति ने मनुष्य समाज की जो दुगति की है वह स्कूल मे आकर स्कूल का भी माफ नही करेगी। हम अपन लिए भी वचारिक क्राति स्वीकार करें और स्कूल क लिए तो करें ही।

'मुझे तो होकम डर है, आप हैडमास्टरी म फेल न हो जाओ। ये अभिभावक समिति वाले हाकम आपका फेल कर देंग।'

'आप जो कहना चाह रह हैं, म समझ रहा हू। पर आप भी थोडा समझिए कि व्यक्ति का स्वय द्वारा नियन्त्रित होन के लिए प्रकृति पर्याप्त समय देती है नहीं होन पर दूसरी शक्ति को नियन्त्रित करन के लिए उसकी प्रकृति द्वारा ही निमन्त्रण मिलता है। आपका पहल भी कहा था अब भी कह रहा हू—आप कवल अपना काम कीजिए। शिक्षक कवल शिक्षक का काम कर। वह दास नही है कि जी-हजूरी कर, स्कूल का समय खराब कर अधिकारियो की अदली करता फिरे। वह शिक्षक है गुरु है,

छात्र का भी, समाज का भी अपने पराए अधिकारियो का भी । जिस देश के शिक्षक अपना मूल काय छोडकर दूसर कामो मे चित्त लगाते फिरते है, वह देश निश्चित रूप स अपनी पटरी छोडकर सहायता के लिए दूसरा की आर वाह फलाए रहता है । और जो अधिकारी इस काय म उनको बल प्रदान करत हैं, व राष्ट्र की राह म गड्ढे खोदने का काम करते हैं, जिनम निश्चित रूप स उनक गिरन की वारी भी आयेगी ।

मव शात हो गए पर उ‍होन देख लिया कि सहयोगियो के मूत हुए विराध का अब उ ‍ सामना जरूर करना पडेगा । वे यह भी जान गए कि इम पूर स्टाफ क तालाव को गदा करने वाली सिफ एक मछली है । इस मछली का अ‍तन पहुचान से हिंसक वातावरण बन जायगा । एक मछली तालाब को गदा कर सकती है तो एक इसान उसे स्वच्छ भी कर सकता है यही अहिंसा का, सुधार का रास्ता है । अत उ‍होन दायमा जी के स्याना‍तर क लिए आगे लिखने के बजाय अपन काम की ओर ही ध्यान दन की मोची । सोच उ‍होन यह भी लिया कि कुछ भी हो जाए वे किसी क लिए कलम को तलवार बनान की व्यथ परेशानी म नही पडेंगे । इससे उनकी ही काय क्षमता गिर जायगी, बौद्धिक ह्रास होगा सो अलग ।

बबली आती तो हमेशा पर आज जरा जल्दी आ गई । उनको कसरत चल रही थी लगोट म । एक बार तो वे लजा गये, आखिर लडकी है पर लडकी अभी एसी कि अभी उसको अपना लडकी हाने का भी पूरा ज्ञान नही । उनका काम चलता रहा । बबली काने मे खडी उ‍हें देखती रही, व बबली को दखत रहे ।

एकाएक उनके दिमाग म एक विचार काधा कि बबली अच्छी दौडाक बन सकता है । उ‍हें लगा जैस वह उनके पीछे दौड रही है उनके बराबर दौड रही है अब आगे दौड रही है । बबली बडी हो गई है दौडने मे इतनी तज हो गई है कि कोई भी प्रतिस्पर्धी उसके आगे नही निकल पा रहा है । दौड क‍ ‍गति ब‍ रही है । बबली बढ रही है दौड की गति बढ रही है । वह स्टट पर दौडन जा रही है, आशीर्वाद ले रही है उनसे । बबली दौड

रिसेश के समय स्टाफ म उन्होंने बात चलाई कि आप सबका दूध बाहर से आता है। आधा दूध आधा पानी। एक योजना है। हम एक गाय खरीदकर बबली के घर बाध देते हैं। हमें आवश्यकतानुसार दूध शुद्ध मिल जाया करेगा और पैसा हमारे दिये रुपय म से महीने का महीने कट जाया करेगा। स्वार्थ और परमार्थ दोनों एक साथ। आपको दूध मिलता रहेगा, बिन बाप की बेटी के दूध का प्रबन्ध हो जायगा गरीब विधवा को थोडी राहत मिल जायगी, हम दूसरा के लिए कुछ करने का सन्तोष मिल जायगा।

'वा का दूध ता होकम अपने काम नई आयगा।" दूध तो होकम, चाइ पीते हैं, बाल बच्चे सब। बकरी का आता है सस्ते भाव का।'

'इसका मतलब दायमा साहब, इन्सानियत भी आपके काम नहीं आती।

उन्हे अफसोस हुआ, यदि वे ऐसा नहीं कहते, और मना लेते ता काम बन जाता। आह हा ता हाथ होते हुए, हाथा का किसी के सामने फैल जाना, उन हाथा को गिरवी माड दना है।

एक बुरे आदमी स भी यदि अच्छाई की शुरूआत होती है ता उसम योग दना चाहिए पर हमको कौन समझाये। ठीक है दायमा साहब गाय तो आयगी ही।

गाय लाओ, शान्ता को समझा दो बबली का खिलाओ पिलाओ तुम भी खाओ पीओ। बचे तो बच दो। दूध बिकने का प्रबन्ध भी करना पडेगा। आठ दस महीने म गाय की कीमत निकल ही जायगी।

गाय उन्होंने गाव म ही दो किलो दूध देने वाली तय करली। चार सौ नगद आर अस्सी उधार रखकर ले भी आये और लाकर शाता के यहा बाध भी दी। उसे पूरी योजना समझा दी। वह कभी उनका कभी गाय को चकित भाव से देखने लगी। घास की कोई समस्या उसने नहीं बतायी। उसके भाइयो के यहा काफी घास थी। रजका भी थोडा थोडा वह वहा से लाया करेगी। उस समय वह बहुत खुश थी। वे भी कम खुश नहीं थ। बुढापे मे औलाद मिल गई हो जैसे, फासी से मुक्ति मिल गई जस। और जब बबली न उनसे पूछा—"सर, यह हमारी गाय है ?

"बिल्कुल, हमारी !"

और इस पर वह ऐसी गदन नचाकर ताली बचाने लगी और गाय की ओर देखकर गाने लगी—"अब तो मजा आयगा रे, अब तो मजा आयगा" तो उसे देखकर व आत्मविभोर हो गय जैसे कुबेर का खजाना मिल गया हो जैसे भगवान न दशन दे दिये हा। तभी शान्ता न पूछ लिया—"आज ता चाय पीयेंगे ?'

'पीनी पड़ेगी ?"

हा नही तो।

तो पीयेंगे। अभी ?"

अभी ता रहा, शाम को !

तो फिर शाम का दो राटी मक्की की और दूध भी लगे हाथ।

शाम का भोजन फिर उन्होने वही किया मेथी का साग था। खा पी कर घर जा रह थ। रास्ते म दायमा जी मिल गये। नमस्कार क बाद पूछा—' बबली के घर पधारना हुआ ?'

यह पूछना उन्हें अच्छा नही लगा। जवाब इट का पत्थर से दन की आदत नही होन स द नही सके। चलत हुए ही बाले— इधर कही भी जाऊगा ता क्या बबली के घर ही जाऊगा। आपके घर भी तो जा सकता हू।'

दायमा जी चुप। दायमा जी हैं बुद्धिमान। जानत हैं अधिक बालने से कही न कही मन की बात निकल ही जाती है।

बबली आज्ञाकारी लडकी सुबह सूर्योदय के साथ ही फील्ड पर आ गइ। व भी आज म ही कसरत नहीं करेंगे। बबली के लिए दौड लगायेंगे। वे नही लगायेंगे तो बबली का क्या सिखायेंगे। बबली के लिए जूता और मौजा की एक नई आवश्यकता पदा हो गई। बैट अब किस खर्चे म से कटौती करागे ? क्या घी खाना बद करागे ? उ ह कभी-कभी इतवार को केवल मात्र फिल्म देखन रावत भाटा चल जात हैं, सो अब नही जायेंगे। घर जायेंगे कभी जब फिल्म का शौक पूरा कर लिया करेंगे।

घर वे अबके नहीं गये। पूरा महीना निकल गया। दिल उनका बहुत कट रहा था, पर मजबूरी थी—पैसा नहीं था। घर तो घर है, उसमें पता ही नहीं चलता कहा जा रहा है पैसा। वहां जाने पर सब अपनी मांगों का थैला फैलाये पंक्ति बद्ध तैयार मिलते हैं। घर से अच्छी बुरी खबर भी नहीं आ रही थी, सो उन्हें तसल्ली थी कि अभी कोई बाल बच्चा हुआ नहीं। भगवान करे कुछ दिन और निकाल ले वह।

वेतन के साथ आठ सौ ग्यारह का पैसा और भत्ता भी आ गया उनका। कुल मिलाकर एक अच्छी खासी रकम लेकर घर गये। घर समझलिया कि दो माह का इकट्ठा वेतन एक साथ लाये है, उन्होंने समझाया नहीं कि वास्तव में हुआ क्या है।

चित्तौड़ बाबूजी के पास पैसा लेने गये तो पता चला वे प्रमोशन पर चले गये हैं। पैसा तो लाना ही है। ऐसे सपूत तो वे अब लिखने नहीं कि घर बैठे पैसे भेज दें। पैसा और समय गवाकर बाबूजी के पास गये। वे गेहूं के व्यापार में लगे हुए थे, ट्रक लेकर भीलवाड़े मंडी में जा रहे थे।

'किधर से पधार रहे हो गुरु जी मतलब कि उसके लिए आये हो क्या मतलब ?"

"आप से दोस्ती ही ऐसी हो गई है कि बिना मिले रहा नहीं गया दरअसल।

बाबूजी ने बहुत सी बातें बनाई और अंत में कहा कि पहली तारीख को स्टाफ का वेतन लेने चित्तौड़ आयेंगे तब उनका सारा हिसाब उनके बच्चे को दे जायेंगे।

अविश्वास करो तो बहुत मगर उन्होंने विश्वास कर लिया कि भाई दादा कहकर ही पैसा पटाना है अब तो। फंस गये उसका नाम क्या !

वहीं से सीधे झरझनी चल दिये। रास्ते में एक समस्या उनके दिमाग में, जो कितने ही दिन पूर्व जन्म ले चुकी थी, आज बढ़कर सताने लगी कि अध्यापकों के रुचि न लेने के इस माहौल में शैक्षणिक स्तर कैसे सुधारा जाय ? क्या यह माहौल ऐसा ही रहेगा ? अध्यापकों के नहीं चाहने तक तो

ऐसा ही रहेगा यह निरीक्षण के माध्यम से काम चलाऊ परिवतन तो इसमें लाया ही जा सकता है।

निरीक्षण परिवीक्षण की एक प्रभावी योजना उन्होंने माच लगते ही जिला शिक्षाधिकारी जी के पास भेजने की सोची ताकि वे इसका अवलोकन करें इसकी कमियां दूर करें और अगले सत्र से कम से कम इस पिछडे क्षेत्र के लिए इस योजना को लागू कर, जिससे इस क्षेत्र का पिछडना रुक जाए और बढना शुरू हो जाए।

योजनानुसार एक निश्चित क्षेत्र के सब उच्च प्राथमिक विद्यालयों को माध्यमिक विद्यालय से और प्राथमिक विद्यालयों को उच्च प्राथमिक विद्यालयों से जोड देने चाहिए। इन सब विद्यालयों की मासिक पढाई योजना और गृहकाय योजना एक ही है। माध्यमिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालयों को और उच्च प्राथमिक विद्यालय का प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय को माह में एक बार इसी पाठ्य एवं गृहकाय योजना के आधार पर बारीकी से देखे रिपोट तयार करे और प्रति उस विद्यालय व विभाग को भेजे। वष में दो बार शक्षणिक परिवीक्षण विभाग की ओर से हो। वष में एक बार फरवरी माच एक क्षेत्र के प्रधानाध्यापक माध्यमिक उच्च प्राथमिक प्राथमिक तीनों मिलकर दूसरे क्षेत्र के तमाम विद्यालयों का परिवीक्षण करें और उस रिपोट के आधार पर शिक्षक को प्रमाण पत्र दिये जाए। आगे इन्हीं प्रमाण पत्रों एव वार्षिक मूल्याकन प्रपत्रों के आधार पर शिक्षक को पुरस्कार के लिए चुना जाय। प्रधानाध्यापक माह में दो बार प्रत्येक शिक्षक का शिक्षण काय का और माह में एक बार उसके प्रत्येक विषय के गृहकाय का निरीक्षण करे। इसका लिखित रिकाड रखे। इन्हीं तमाम रिपोर्टों के आधार पर वार्षिक मूल्याकन प्रपत्र विचार किये जाय —शत यही है कि सारा काय हो ईमानदारी से।

शिक्षा विभाग, छात्र शिक्षक, अभिभावक इसके प्रशासक और शासक का एक चक्र है। इसमें कहीं एक जगह बेईमानी आ जाती है, तो इसका प्रभाव धीरे धीरे पूरे चक्र के अंगों पर पड जाता है, वैसे ही कहीं एक जगह

ईमानदारी आयी तो इसका प्रभाव भी सब जगह पर पडेगा ही। ईमानदारी के दो दुश्मन हैं—दया और निदयता । दया इमानदारी को पलन नही देती तो निदयता उस चलन नही देती। अत इनका उचित उपभोग करके ही ईमानदार रहा जा सकता है। काम जो हमें साप रखा है उस अपना मान लें ता सारा झगडा यही समाप्त हो जाता है।

सावजनिक क्षेत्र म, व्यक्तिगत क्षेत्र म जहा काम हो रहे हैं, करन वाले न अपना समझा है, इसलिए हारहे ह। कुछ लोग वास्तव म ऐस होत हैं जो काम नही करते, ऐसे व्यक्ति तो, मजबूरी न आन तक अपन शरीर का का काम भी नही करते हैं, वे क्षम्य हैं। समाज म कुछ लोग ऐसे भी होने हैं, जा पागल मान जाते है वे काम नही करते उनस कोई इसकी अपेक्षा भी नही करता। वे गालिया भी दते ह, पत्थर भी मारते हैं इसका भी कोई बुरा नही मानता। ऐस लोगो की वजह से कोई काम भी नही छोडता क्योकि एसा करने वाला भी पाठक की गिनती मे आता है, और पागल बनना एक काम न करन के लिए केवल, कोई नही चाहेगा।

ध्यान भग हुआ उनका, जब एक परिचित बालक न उनसे नमस्ते किया। जेब स रूमाल निकालकर वे कपडा पर जमी धूल को झाडन लगे।

स्कूल म आये तो देर स, बबली के पास पहले पहुचे। बबली पाच सात बालको को नानी वनी कहानी कह रही थी। उनको दखते ही सबको रोकती हुई "सर आ गये" चिल्लाती हुई उनके पावो से आ झूली। दूसरे बालको न भी उसका पूरा अनुकरण किया। उनकी ओर दखकर सबकी आखें मुस्करायी, चहरे मुस्कराये, उनकी भी कली कली खिल उठी। सबको प्यार किया—मस्तक सर सहलाये।

"बबला पगली है।'

'सर पगले है।"

यही सो सुनने के लिए उनके कान तरस रहे थे।

' जीजी, कसी है रानी की ?"

"ठीक।"

और गाय कसी है रानी का ?'

"ठीक।"

'दूध कितना दतो है ?'

' इत्ता सारा।'

" दखूगा शाम का घर जाकर कहना जीजी से।'

शाम को खान स निपटकर व बबली के घर चल दिये। शा ता प्रतिक्षा कर ही रही थी। दखते ही थाली परोस दी।

मैं तो खाकर आया हू, बेंडी।'

फिर वही बात।" उसन जिद्द न करन म ही अपनी भलाई समझी ' छोडा चलो भाभी वगरह कैसी है ?'

भाभी ठीक है वगरह का पता नहा।"

हस दी शा ता। वे भी हसन लगे। बबली सो गई थी। शा ता न चाय का पानी चढा दिया।

मैं खास बात यह कहने आया हू कि मेरी इलेक्शन म डयूटी आ गई है। इस च दा रानी को जब मैं नही मिलू दौडात रहना।'

'मैं जाउगी फिरड पर ?

'तो क्या हो गया ? दूर क्षितिज मे भरे अधकार को देखकर नही उठने वाल को, कोई यह नही कहता कि भूल कर रहा है पर उषा का दखकर भी जब कोई नही उठता तो हर काई उसे टाक देता है। यही नही, आने वाले सूरज की सहस्त्र रश्मियो एसे जीवन को बिना आलाकित किये छोड भी जाती है। समझी !'

'मेरे लिए तो सूरज भी '

"चुप चुप दख बिल्ली आ गई दूध पी जायगी।

'है कहा किधर '

वे हसन लग। शा ता मुह बनाती हुई चाय छानन लगी।

मकान पर आकर अपनी शक्षिक उन्नयन हेतु दिमाग मे जमी योजना को कागज पर उतारा। डेढ-दो बजे तक व काम करते ही रहे। काय पूरा

होन पर स"तोप का एक सास लेकर सो गये। सुबह उठे तो खूब खुश थे। सुबह भी वडी प्यारी थी। सूरज न"ही सुकुमार बदलिया की मुलायम गोद म झूलता, खिलखिलाता, दशो दिशाओ को अपने सीने स लगान के लिए वाह फलाता जा रहा था, जिसे देखन पक्षिया के झुण्ड क झुण्ड बाहर निक्ल आये थे। वायु की बासुरी का आन"द लेत व फिल्ड पर आये।

बबली उनका इन्तजार कर रही थी। इतजार करती बबली पर योछावर हो गय वे। उनका इशारा मिलने ही उनके पीछे उनके बराबर, उनके आगे दौडने लगी वह। उसका उत्साह बढ रहा था, उसका दिल बढ रहा था। उन्ह आशा हो गयी कि बबली कुछ कर गुजरगी। कुछ समय बाद दौड जीतने का नाम बवली होगा। दौड समाप्त कर हमेशा की भाति उ"होन बबली का उठाया। उसके लाल हुए कपोलो को चुमा, उसके खिलत चेहरे को आखें भरकर देखा, और उसे घर जान के लिए छोड दिया। जाती हुई बवली का देखने लगे खुश होने लगे—उनकी बवली कली की तरह खिलती, उनके रोम रोम म खुशबू भरती जा रही है। दु खी हान लगे—उनकी बबली उनका कलेजा लिए चली जा रही है। बवली का जूता कुछ ही दिन का महमान रह गया है। बवली के जैसी ही मासूम कि"तु ताजी चि"ता लिये वे भी घर के लिए चल दिए।

स्कूल मे उ"होने अपनी योजना दायमा जी को दिखाई। उन्ह समझाया कि इस याजना म वे और भी कोई सुझाव देना चाह, कही कमी हो और निकालना चाह तो बता दें। दायमाजी न कुछ नही किया, वल्कि उनके दिमाग म जो आया, वयान कर दिया—"ये होकम योजना तो बहुत अच्छी है। इसमे मास्टरो का लाटा भर जायगा।'

"काम करन से ऐसा होगा ?"

'अव होकम आपको कौन समझाव ! काम ता कोई करता नही। आप भी होकम फालतू परेशान हो रहे हो। कल आपका ट्रासफर हो जायगा। फेर कोई नही पूछेगा। सब वैसा का वसा चलता रहेगा।'

"मैं नही रहूगा तो क्या हुआ ! आने वाला करेगा। बाप के अधूरे

काम बेटा करता है बेटे के अधूरे काम पोता करता है, इसी विश्वास पर तो काम चलता है।

बो तो समझा होकम। वो बाप बेटे की भावना है। यो तो मेरे बाप के बाप हैं। वो बाप जमीन बनाता है, तो बेटा खेत बनाता है, तो पोता कुंवा लगाता है। यो तो राजा बदलते ही काज भी बदल जाता है। सब अपना सिक्का जमाना चाहते हैं। अधूरे काम पूरे कोई नहीं करता। गांधी जी आये को कितने साल हो गये चले भी गये अरसा हो गया। हुआ उनका एक भी काम पूर्ण। हरिजन वाला काम, जो उन्होंने छोड़ा था, वह पड़ा है आजादी का काम जो उन्होंने छोड़ा था, वह पड़ा है। उनकी सत्य अहिंसा, ज्ञान, ध्यान सब उनके जाते ही का गये, लाग खा गये उनको। किसान के जाते ही सुअर खा गये पूरा खेत और निकाल दिये डण्ठल जीवों के चुभने के लिए। कर लो, बिगाड़ लो कोई उनका, वे तो गांधी जी का नाम लेकर कर रहे हैं उनको जो करना है। इस वास्ते हाकम आपको किसी चक्कर में पड़ो ई मत।

'इसका अर्थ यह हुआ कि हम अशुद्ध और अवैज्ञानिक शिक्षण का ढर्रा चलाते ही रहना चाहते हैं। हम शब्दों के गलत अर्थ बताते रहें, गलत तरीके से गणित करवाते रहें गृह कार्य को सुधारने के बजाय सही का निशान बनाकर इस बात की पुष्टि करते रहें कि यह सही है और छात्रों के मस्तिष्क में गलत ज्ञान भरते रहें, छात्रों की हत्या करते रहें। कोई इस रोकने का प्रयास कर रहा है तो आप उसमें टांग अड़ा रहे हैं। क्या यह गांधी जी की जय बोलने और खेत खाने वाला काम नहीं है। जब आपने समस्या को इतने निकट से महसूसा है, तो इसे दूर करने में हाथ भी बढ़ाइये !'

'इस काम में आप फेल जाओगे होकम! कोई इस फाइल को नहीं पढ़ेगा। कचरे में फेंक देगा। आप बाट देखते रहना।

चलते मास के चलते जीवन के सम्भावना की मौत करना ऐसी हत्या है कि इसके बाद वह जीवन का आनन्द न ले सकता है न दे सकता

है।"

उन्होंने उसी दिन वह फाइल कार्यालय के नाम पोस्ट करवाने के लिए चपरासी को भेज दिया, और आप बैठ गये अर्द्ध वार्षिक परीक्षा के बण्डलों में से यहाँ वहाँ से कुछ कापियाँ लेकर देखने।

गलत मूल्यांकन पर उनका माथा जरूर ठनका पर कोई एक्शन नहीं लिया। किंतु एक जगह डेढ़ में से दो नम्बर दिये जाना देखकर वे भभक उठे। देखा कि यह बारवर साहब का काम है। कापियाँ लिए [illegible] साहब के पास आये ताकि उनकी कक्षा खराब भी न हो, और [illegible] भी मिल जाय। शर्मा साहब तम्बाकू बनाते हुए उनकी निगाह ने [illegible]। आग में घी पड़ गया। इस भभकती हुई आग को भी वे [illegible] गये। बुझदिली है उनकी वे मौके पर भी किसी को कुछ नहीं कह [illegible], [illegible] साहब ने कुर्सी पर बैठे बैठे ही गर्दन घुमाकर थूक उछाल दिया। [illegible] उनका विष्णु शेष नाग बनकर फुफकार उठा—"मिस्टर [illegible], [illegible] मारे गर्दन झुकी जा रही है मेरी।"

हे साहब, हा —तम्बाकू को आप बीड़ी नहीं पीने [illegible], [illegible]।'

'बीड़ी नहीं पीने देते तो तम्बाकू खाओ, तम्बाकू [illegible] अफीम खाओ, गाजा पीओ, चरस पीओ, शराब पीओ, [illegible] समझ।

इधर तीसरी कक्षा में केवल तीन छात्र। [illegible] और अभी केवल तीन। तीसरी कक्षा में चले गये।

बारवर साहब ! लड़के भाग गये क्या ?"

"लड़के लड़के हो सर लड़के [illegible]।"

मुश्किल यह है कि आप क्या [illegible], और [illegible] इस समझने की कोशिश नहीं करते।"

उन छात्रों को वे भूल [illegible] मॉनिटर को [illegible] बुलाकर कह दिया था कि जैसे [illegible] उनको [illegible] रिसेस के बाद मॉनिटर उन छात्रों [illegible] आया।

"कहा गये थे तुम ? '

' बारबर माड' साब के घर । '

' अच्छा, क्यो क्या गये ?'

' वा के घर ठावडा माज्या, घेघरा निकाल्या साग वास्त।"

वे फिर उफान खा गये। वारबर साहब को बुलाया।

हा सर ? '

'ये बालक क्या कह रहे है ?"

'हा सर मुझे ध्यान आ गया था। ये सब मुझ से छुट्टी लेकर हाथ मुह धान गये थ।"

'मिस्टर बारवर ! झूठ की सीमा होता है। इन बच्चा को आपन घर भेजा था, झूठे बतन साफ करवान के लिए चने छीलन के लिए। बारबर साहब। ये आपके भाई हैं। छोटे भाई हैं आपके । क्या आप अपन छोटे भाइयो म घर का काम करवात हैं? क्या आप स्कूल स घर के ऐमे काम के लिए वापस बुला लेते हैं? क्या उ ह स्कूल समय म किसी अध्यापक के घर बतन माजते देखकर आप सहन कर लेते हैं? बताइये ! क्या उनके मा बाप इसलिए उनको स्कूल भेजत है कि आप उन्ह हाक कर अपने घर काम करवाने भेज दें। बताइये क्या आप अध्यापक के पाव पर कुल्हाडा नही चला रहे है? अध्यापक-काय का गला नही दवा रहे हैं? विद्यालय के विश्वास का पाताल नहीं पहुचा रह है? बताइये ! अपना काम आप करने का आदश पाठ दन की जगह अपना काम दूसरों से लेने का व्यवहारिक पाठ देकर राष्ट्र की नीति के विरुद्ध दासत्व भाव और बेगार लेने की परम्परा को विकसित नहीं कर रहे ह ? मर गुरुदव ! जाइये हम कुछ नहीं कर सकत, हमस कुछ भी नहीं नहीं हो सकता। हम आत्म हत्या कर सकत है सो कर रहे हैं बस।'

प्रकृति इसान को जिधर झुक जाती है, उधर ऐसी झुकती है कि इसके अलावा भी प्रकृति है यह तथ्य ध्यान म आता ही नहीं। शर्मा साहब की दृष्टि म स्टाफ बेकार और स्टाफ की दृष्टि म शर्मा साहब बेकार। बेकार

इन्सान होता ही नही, यह सच्चाई किसी के दिमाग म नही आई। दूसर दिन चौहान साहब कुछ लेट हो गये और जैसा कि रानी को कानी क्या कह दिया उनको समय के लिय क्या चेता दिया। वे मुह को गुब्बारा बना मी० एल० रखकर चले गये। और परमो जब वे स्कूल गये तो न उनम पहने जान वाला न मलाम दुआ की, न आन वाला न नजर मिलायी। चपरासी भी बदल गया। ऐसी एकता निमाण म आ जाये ता स्वय क चार और धरती के आठ चाद लग जाये।

चपरासी को प्रागण की सफाई के लिए दस बार कह दिया हागा पर उस माई के लाल क कान पर जू तक नही रेंगी। वे जहर का घूट पीकर रह गये। सारा गुस्सा उनका चपरासी पर केन्द्रित हो गया पर कहा न ऐस काम न करन वाले आधे पागल होन है, तो इनको देखकर गुस्सा करने वाल पूरे पागल। यदि तुम किसी को दो रोटी नही द सकत हो तो किसी की रोटी छीनो भी मत। वे इस बात को छोड चुके कि चपरासी के विरुद्ध दो शब्द लिखने हैं।

शाम को भ्रमण पर जान समय साथी ग्रामीणो ने उनक कान भर दिये कि चपरासी गाव म उन्ह गालिया देता फिरता है, और इस बात स उनकी बुझी हुई अग्नि फिर प्रज्वलित हो उठी। वे मन ही मन निश्चय कर रहे कि शमशान म राख पर उनकी नजर चली गई।

"कौन मर गया, राम जी?"

'नरू को छोरा मर गयो सा विचारा को।'

उनके मस्तिष्क के तार तार बन उठे। बच्चा मर गया। बच्चे उनके भी हैं। बच्चे उनके रामलखन वे बच्चा के राजा दशरथ। नही नही किसी को दुखी मत करो। गरीब की हाय बुरी होती है। हागा, छोडो चप रासी को। आदमी मे जैसी बुद्धी हागी वसा ही तो काम करेगा।

अगल दिन फिर वही नफरत स्टाफ की उन्हें झेलनी पडी। नमस्त बद, बात चीत बद। कवल एक शिक्षक, पूरे स्टाफ म उनसे मानवीय सम्ब ध रखे हुए है। इस बात से वे भी नही झुके बल्कि और तन गये। वे जान गये

कि स्टाफ को शक्ति कहा से मिलती है। उस विषयगामिनी शक्ति के स्रोत को ही पकड़ा जाय। शर्मा जी ! अब आपके लिए लिखना पड़ेगा।

और उन्होंने दायमा जी के लिए कसकर एक पत्र तयार किया। इधर उधर से प्रमाण एकत्रित कर सलग्न भी किये। पूरा लिफाफा तयार किया और उसमें उनका किसी न कहा —ईसा ने तो मौत के उस पार तक की यातना झेलने पर भी अपने विरोधियों को क्षमा कर देने के लिए प्रभु से प्रार्थना की, वे अपने जीवन म अमृत घोल देने वाल विरोधी को क्षमा नहीं कर सकते। उन्होंने रात को वह लिफाफा सिगड़ी की भेंट चढ़ा दिया। अगल दिन उन्होंने अपनी मेज पर ग्लास के नीचे यह लिखकर रख दिया —' विष पान।'

चुनाव प्रशिक्षण के दिन डिप्टी साहब मिल गये। उन्होंने साफ निवदन किया कि माहौल बिगड़ चुका है। इतना कि उन्हें एक का छोड़कर कोई हेड मास्टर भी नही मानता। स्कूल का चपरासी भी उनकी चपरासी जितना इज्जत नही करता। यह सारा दयमा जी के नतत्व म हो रहा है। आल राइट,उनको हटा दें ?

"डॉक्टर के पास तीमारदार बीमार के लिए जाए और यह सुनने को मिले कि उसे मार दें तो वह सोचने लगता है—डॉक्टर सही नही है उसका और बीमार का भाग्य कि विधाता ने एसे ही डाक्टर से उसकी डोर बाध दी है। वे बोले— घर छूट जायगा उनका और तो कुछ नही साहब।'

इस बीच वहा उनकी पार्टी के प्रथम मतदान अधिकारी श्री धाकड़ उनसे मिलने व जिला शिक्षक सघ के मत्री श्री दायमा डिप्टी साहब से मिलने आ गये। हाल चाल पूछने के बाद वे सबको वही छोड़ जनेऊ चढ़ात एक ओर चल गये।

बाद म प्रशिक्षण खतम होने पर धाकड़ उनसे फिर मिले। मिलत ही एकान्त म ले जाकर कहने लग कि मत्री महोदय डिप्टी साहब को समझा रहे थे कि यह शर्मा तो है युज लस। दायमा साहब को वहा से मत हटाना। अपना कम्युनिटी का आदमी है, ध्यान रखना।

एक व्यग्यात्म मुस्कान आकर निकल गई उनके चेहरे पर। "चलो! दायमा के मत्री होने से दायमा मास्टर तो सुरक्षित हो गये। मुझे तो भय है, शिक्षक सघ के ऐसे पदाधिकारी मिलकर शिक्षक सघ को कोई नया अथ न दे दे।"

वे दायमा जी के ट्रासफर के पक्ष म थे ही कहा। ट्रासफर की भट्टी म झाक देने से कोई स्वण बन जायगा क्या! अरे वह तो जल भुन कर और बेकार हो जाएगा। वे घर से इतनी दूर बैठे है, उनकी आत्मा जानती है उन पर क्या गुजर ही है। फिर वे ऐस नरक म दूसरा को झोकने का कारण क्या बनें। दूर भेजन से निश्चय ही आर्थिक स्थिति खराब होगी और इसरा प्रभाव वच्चो पर पडेगा भावी समाज पर पडेगा और राष्ट्र के भावी निमाण पर पडेगा, क्या यह सोचन की बात नही है!

झूठी सच्ची शिकायत हुई और झट ट्रासफर कर दिया। क्या ट्रासफर के अलावा कोई और उपाय नही है? इतनी विचार गोष्ठिया होती है सम्मेलन होन है वाक्पीठें होती है, इसम उसका उपाय नही खोजा जा सकता है? खोजना चाहिए। जो चीज आज दूर की और काम की नही लग रही है, कल वही चीज आपके काम की बनगी। आज का राष्टीय हित कल का आपका हित है इतना नही सोचत ता कहना चाहिए—अपने बच्चे का हित भी नही सोचत।

खेत तो खेत है, उसम हम कुछ भी बो दें। घणा की फसल काटकर प्यार की फमन बोन का उ होने निश्चय किया, स्टाफ म। घृणा को प्यार से काटो, प्यार की फमल बो जाएगी। कल तो उ हें वेतन लेने जाना है, वहा से लौटत ही वे इसी काम मे लगेंगे। वे स्टाफ म बडे है उनकी जिम्मे दारी है जहर पीकर दूध पदा करने की। घणा की इट का जवाब उन्हे घणा के पत्थर से मिले, यह फिर भी सहन है। लेकिन इस घणा की गदगी मे स्कूल का दम घुटा जा रहा है, यह बदास्त नहीं। इसलिए उसे राहत देने के लिए समस्त आत्माभिमान त्यागकर इसको हटान की पहल उन्हें ही करनी है। 'विपपान" उनकी मेज पर लिखे य शब्द उन्ह बराबर बल

दिए जा रहे थे।

छह तारीख को सात बजे नोटा का वेग लिए व रावत भाटा से चले। चलते आए पहाड पर रास्ते की भयानकता का चिंतन की धारा में प्रवाहित करते हुए, चलते आये। चिडियाओं की चिहुक चिहुक से ध्यान भंग हुआ भी तो पुनः खींच लिया। आगे सहसा साप की केंचुली पर पाव पड जाने से उनका ध्यान जो चौपट हुआ तो वापस नहीं जमा। कौन जाने किस आशंका से खडे होगए और नजरें आगे पहुंचने की सीमा तक फैल गईं। कुछ दूरी पर धोकडे की छाया में बैठे दो आदिवासी जैसे व्यक्तियों पर उनकी नजर ठहर गई। इससे वे कुछ स्थिर हुए। प्रसन्न भी, अब डर जैसी कोई बात नहीं है। वे पुनः अपनी धुन में मस्त कदम तेजी से बढाने लगे। जैसे ही वे उन व्यक्तियों के पास गए, दोनों खडे होगए— एक लट्ठ तान कर दूसरा लम्बे दस्ते वाला कुल्हाडा खडा कर। एक पल नहीं लगा और वे समझ गए कि आज उनके जीवन की अंतिम घटना घटेगी या कुछ भी ऐसा विभत्स घटेगा कि जीवन भर भोगना पडेगा। वे चलते ही रहे। वे उनमें आगे निकले ही थे कि लट्ठ उनकी ओर हवा को चीरता हुआ धम से धोकडे की शाखा से टकराया। यदि वे उनके कदम निर्भयता और संतुलन खोकर नहीं पडते तो निश्चय ही सर उनका पराया हो गया होता।

भागना बेकार था और भाग कर जाते भी कहा। डर इतना समा गया कि पाव बेकार हो गए, दिमाग जड हो गया। दोनों काल और महाकाल फन उठाये, जबडा खोले तैयार। फिर भी उन्होंने बेग का यह सोचकर इतना जोर से फेंका कि, यदि यह पहाड के नीचे चला जायगा तो इनके बच जाने की सम्भावना तो बन ही जायगी। लेकिन बेग को पूरा वेग नहीं मिला, रास्ते में ही अटक कर कस्केंदी की टहनी पर लटक गया।

रुपए के लालच और लालच के मनोविज्ञान ने अपना काम किया और वे दोनों उनको छोडकर बेग की तरफ लपके। जैसे ही उनका ध्यान उनकी ओर से हटा, उनको बल मिला दिमाग मिला। उन्होंने कोई किलो भर का पत्थर उठाकर फेंका उनकी ओर। बिल्ली के भाग्य का ही छींका

टूटा हा—पत्थर जसे गया वसे ही पडा लट्ठ वाले के भेजे पर। भेजा बिखर गया और आदमी लहराकर जमीन पर आ गिरा। कुल्हाडा धारी पलटकर रपठा उनकी ओर। वे पेड की शाखा के नीचे हो गए और कुल्हाडा शाखा म पूरा घुम गया। वह जोर लगाकर उसका निकालें इतन मे तो उन्होंने दनादन उसके पेट म प्रहार कर उसे बेकार कर दिया। अब उनकी बारी थी। लट्ठ उठाकर कुल्हाडा धारी की टाग पर ऐसा प्रहार किया कि एक बारगी तो वह टाग पकड कर खडा हो गया पर दूसरे ही क्षण जमीन पर धम से गिरकर लोट गया।

फिर भी जान क्या, वे बेग उठाते ही दौडने लगे। पहाड का खतरनाक ढाल भी उनके दौडने पर लगाम न दे सका। कलेजा धडक रहा था, पत्थर लुढक रह थे, ठोकरे खा रहे थे और दौडे चले जा रहे थे। एक जगह पाव कुछ अटका तो दूसरा पाव सही जम न सका और वे फिसल गए। गति थी ही, वेग था ही सो गिर गए और गिरकर लुढक गये। आगे खड्ढ था, उसम जा गिरे। बेहोश होगए। किस्मत वाले थे जो नीचे से आने वाले ग्वालो को गिरत हुए दिखाई दे गया। ग्वाले भागकर उनके पास आये। गायो की चिंता छोड, एक ने बेग लिया, दूसरे ने तीसरे की सहायता से उन्हें पीठ पर लादा और घर ला सुलाया। खबर सुनी तो शान्ता दौडी आई। भौचक्का सी बबली भी साथ आ गई।

दोपहर तक उन्हे होश आया। हाथ पैर सही सलामत थे। गले के पीछे से कमर तक तीखी पीडा पहुचाने वाला दद था। ग्वाले ने उन्हें बेग सम्हलाया, जितना रुपया था गिनाया, फिर आने का वादा किया और चले गए।

रुपया देखकर उनका आधा दद जाता रहा। कैसा ससार है। एक रुपए के लिए जान लेता है, दूसरा जान बचाकर रुपया देता है।

बाहर गाव गया वह गावो मे डाक्टर के नाम से जाना जाने वाला व्यक्ति शाम का लौट आया। जो रात तक उनके पास बना रहा। प्रेमी भी हैं, अभी ससार म। उसने दवाइया दी, इजेक्शन दिए, एक नीद की

गोली रख दी ताकि वह दुश्मन नही आए तो उसे पकड कर लायी जा सके, ऐसा इशारा किया। फिर वहा निरन्तर बढती हुई भीड को बोले कि अच्छा! अब गुरुजी का सोने दीजिए। आराम करने दीजिए, आप लोग घर जाइए अब गुरुजी ठीक हैं।

कुछ चाह रहे थे, कुछ नहीं चाह रहे थे, थके मादे लाग नीद का नाम सुनते ही उठने लगे। शान्ता और बबली रह गइ।

"तू भी जा बबली का यही छोड दे। छोड दे बबली को जा सो जा।"

शान्ता ने मना किया—'नहीं जाती।'

"तो मत जा। तुम्ने दखती हुई इन लागा की नजरा को देखा तूने? कितनी गदी और घिनौनी थी! इन समझदार लोगा की समझ साप के विष से भी ज्यादा विषैली हैं। करना इसका मुकाबला फिर।

शान्ता बुझी चाल चलती हुई चली गई। बबली से उन्होंने पानी माग कर नीद की गाली घटक ली। बबली को अपने पास सुलाकर उसका गाल और सर सहलाने लगे। बबली ने भी नन्ही हथली उनके गाल पर फलादी। उनका सर उसकी छाती स जा लगा। उनकी मा उन्हें छाती से लगा रही है पूरे शरीर को सहला रही है बडबडा रही है—'मेरा क्या होता बेटा!" "मैं मर जाता मा आज मैं मर जाता मर जाता मैं आज।" उनकी आखो से आसू ढुलकने लगे, मोती के मोती।

"सर क्या रो रहे हो?"

"रानी—मरी रानी बेटी! मेरी मा मुझे मार डालत आज मरी मा। और वे उसे सीन स चिपका कर बुरी तरह फफक उठे। बबली सचमुच मा बन गई थी। वह उनके आसू पाछने लगी— सर, कहानी सुनाऊ?

'सुनाओ रानी बिटिया।'

'एक जुलाहा रेजे बेचन गया। रास्त म गिरगिट मिला। जुलाहे न उससे पूछा—क्या भाई, रेजे लेगा?'

'गिरगिट ने गदन हिलायी। उसन समझा—ले रहा है। उसने फिर

पूछा—"सब लेगा ?"

गिरगिट ने गर्दन हिलायी। उसने समझा—लेगा!

जुलाहे ने फिर पूछा—"उधार लेगा ?'

गिरगिट ने गर्दन हिलाई। उसने समझ लिया कि उधार लेगा।" वह सब रेजे उसके पास रख कर घर आ गया। खुश होकर औरत से बोला—"आज बिक्री अच्छी हुई, सारे रेजे बिक गये।"

कहानी खतम हो गई, उधर उनकी नींद शुरू हो गई। पर बबली को नींद कहां ? वह सारे कमरे में नजरें घुमा रही थी। बैग पर उसकी नजर रुकी। वह उठी, बैग उतारा, देखा, रुपया ही रुपया। सोचा—एक शरारत हो जाए। कण्डों के बीच जगह बनाकर बैग उलट दिया वहां, कण्डे पुनः जमा दिए। खाली बैग फिर से खूंटी पर लटका दिया। कुछ देर कण्डों की ओर देखती रही, फिर सो गई।

बाहर कोई है उसे शक हो गई। उठकर दबे पांव आंगन में आई। धीरे से किवाड़ खुला। भीतर किसी के आने से पहले ही वह उठकर खटिया के पीछे आ छिपी। आदमी एक था केवल, कुल्हाड़ी थी हाथ में चमकदार। भीतर आया वह, कमरे में घुमा। बैग पर झपटा बाज की तरह लेकर उड़ गया हवा की तरह। बबली ने दौड़कर किवाड़ अड़का दिया। कमरे का दरवाजा भी भीतर से बन्द कर दिया और बैठ गई कि जैसे ही किसी के आने की आहट हुई, वह जोर से चिल्लाई। लोग आ जायेंगे, चोर भाग जायेंगे। चोर तो लौट कर न आया, नींद फिर आ गई।

सुबह उठते ही उनकी नजर रोज तो दिवान पर लगे नीलकंठ की ओर जाती है, आज बैग की तरफ गई। बैग का न पा उनके होश उड़ गए। पसीना आ गया चेहरे पर अंधेरा छा गया आंखों पर। एस में बबली को जोर से झकझोरा। वह चौंक कर उठ बैठी।

"बबली! रुपया रुपया बैग ?'

बबली मुस्करायी। चारपाई से नीचे उतरी, कण्डे हटाये और नोटों की गड्डियां निकालकर लाई। भक्त को भगवान मिल गये। खुशी के मारे

पागल हो उठे। चिल्ला उठे— बबली रानी।' और अब इस बबली पगली ने रात की घटना बतायी तो खीच कर ऐसी दिल से लगायी कि दिल की धड़कन बन गई। बबली तो भगवती है उनके लिए वरदान है उनके लिए। बबली के प्रति स्नेह, अहसान और सम्मान से भर गये वे। यह बद-माशी पहाड़ में यहाँ तक की है किसकी ? स्टाफ के अलावा तो ऐसी मोलह आने खबर कोई नही दे सकता। और उनके भाव स्टाफ के प्रति फिर बदलने लगे।

चुनाव में जान के दिन तक तक वे पूर्ण स्वस्थ हो गये। थैले में आवश्यक कपड़े, डाढी का डिब्बा सुबह ही जम गये थे। खाना होने से पहले शान्ता से मिल आना चाहिए। शान्ता बाला से पानी माड रही थी।

समय पर नहाया धाया कर समभी।'

मास्टरो के तो बस हर जगह मास्टरी है।—छाछ बनाई है। जीरा वगरह डाल दू ? पीओगे ?

'यह वगरह मत डालना, ठीक।

मुस्कराने लगी वह। छाछ तयार होने लगी। वे गद्दी पर बठ गये।

मेरे पास ढाई सौ के करीब रुपये जमा हो गये हैं घर हो जाओगे ही लेते जाओ।

मेरा घर तेरे भरोसे है क्या !' वे खड़े हो गये मन का सारा स्वाद ही बिगड गया। दूध में नमक पड गया। कुछ तनाव सा आ गया बदन में।

भगवान करे ऐसा सब ओर हो। उसे भी अपने कहे पर पछतावा हुआ।—हिसाब की बात बता रही थी मैं। यह तो बाप बेटा में भी होता है।

और समझा मुर्ख, गवार कहीं की। हिसाब बाप बेटा में होता है, बहन भाई में नही बाप बेटी में नहीं। चल जा नही पीता छाछ। बड़ी आछी है तू।'

लडना है ?'

'वे चुप।

"लो थोडी छाछ पीलो, लडने म मदद करेगी।"

उनक अधर फडक कर रह गये। नजर उठी और गिर गई। अगुलिया खुली और बद हो गइ।

"हू ता गुस्सा है। ठहरो, बबली को बुलाती हू। वो पिलायगी आपको तो। मैं कौन हू! मेरा जोर है ही क्या ।'

उन्होने उसकी आर दखा। देखकर वही बठ गये। "तू तू बहुत बुरी है। और और फिर राती ह ।' आगे बोलत तो कसे, कण्ठ ही बद हो गया था। शान्ता छाछ लिये उनके सामने आ खडी हुई, और छाछ देना छोड कर उनके गीले गालो का पल्ले स पोछने लगी।

आसू और पल्ल ने इतना स्नेह बिखेर दिया कि चुनाव मे भी उनके बदन म सरसरी दौडती रही, रोगटे खडे हाने रह, पलके गीली होती रही। नवे दिन वे चाहत ता घर जा सकते थ, पर रहा गये, झरझरी लौट गये सीध, और सीधे गये बबली के पास। कितना हर्ष था, कितना उल्लास। गुलाब खिल खिल जा रहा था भीतर, सौरभ बिखर बिखर जा रही थी बाहर।

लेकिन घर बबली नही मिली। शान्ता ही थी। जान गई वह कि ये आखें बबली को तलाश रही हैं।

'आपकी पगली की आदत आपने खूब बिगाड रखी है। बिन नहाय नही खायेगी। बठो माचे पर। थक गये होगे? चाय बनाऊ?'

रोटी खाऊगा। बबली का आन दो, उसी के साथ।"

'आपके इनके मास्टर लागा के लिए गाली निकलती है।"

क्यो क्या भला?'

और जब सारा ससार लोक सभा के चुनाव समाचार सुन रहा था व अपनी शिकायत की खबर सुन रह थे, शान्ता कह रही थी—मेरे ध्यान म लोग बडी तरक्की कर रहे थ, मुझे मालूम नही था कि ये जितना आकाश म नही उठ रह हैं उतने पाताल म धस जा रह ह। आपके जाने के बाद ही मास्टरा न ऐसा किया।

लू गाव वाला क अपन प्रभाव म । तीन चार जगह रिपोर्ट की बतात हैं।"

मलिन हो गया फूल ! तुषारपात हो गया उस पर । 'आह तो क्या आगे वाले अन पानी खान वाल नहीं है क्या ! सब दूध का दूध पानी का पानी हो जायगा । बबली ! अरे, वह आ गई पगली । देख।'

उ हान दौडकर बबली का उठा लिया।

'बबली मरी रानी बिटिया पगली है तू ?'

हू।'

हू ऊ ।' फिर खिल उठे व । इधर उधर स आयी वर्फीली हवा बबली कली की मधुर मुस्रान की मार स तितर बितर हो गई।

मगर मर कर जैसे नया शरीर नई शक्ति लेकर जीवन लौट आता है, वैसे ही वर्फीली हवा तूफान बनकर उन पर टूट पडी। उनकी धारा सी कल कल करती प्रसन्नता की फूल पत्तियो पर व बालक सी खिल खिल करती मुस्कान की कलिया पर पाला मार गया । या किसी जमने हुए पौधे पर मूख लकडहारे के द्वारा जबरदस्त प्रहार हो गया । व तिलमिला उठे। मई के प्रथम सप्ताह म उनको स्थानान्तर आदेश मिल गया।

विरोधिया न उनकी जलती हुई होली पर छककर दिवाली मनाइ। विभाग के प्रति उनके विश्वास की सती शिक्षाधिकारी के अग्नि कुण्ड म गिरकर क्षण भर भी न लगा और जलकर राख हो गई। गाव मे हारे हुए सनिक वाली उनकी दशा हा गई। उनकी हेटी हा गई सबके सामने। किसी से बात भी कसे करे ! बात ता अब इन्सपक्टर स करनी है।

अन्दर जान के लिए चिट की परम्परा जरा भी आडे नही आई। द्वार पर खडा चपरासी भी उस तूफान को न रोक सका। शिक्षाधिकारी जी के ठीक पास उन्हान पाव पटका।

क्या बदतमीजी है ?

'मुझे भी यही पूछना है।

साहब न क्षण भर उनकी ओर देखा। कुछ समझा कुछ न समझा। उसस भी अधिक आवेश म मगर धीरे स डाटा—वाट।

'मरा ट्रासफर क्या किया ?

'हमन तुमको विभाग से ही क्यो न निकाल दिया ! तुम एक दुश्चरित्र आदमी हो, क्या नाम स । गाव म शिकायत आई—एक विधवा से तुम्हारे ताल्लुक है, क्या नाम से ।"

'इसपक्टर साहब ! वे इतन ओर स चिल्लाय कि छत तक काप उठी।

'गट आउट ।" राधे श्याम बाहर निकालो इस जानवर को।"

"मैं बहुत बुझदिल हू ।" अत्यधिक कष्ट क कारण उनकी आवाज काप रही थी। बकर के गल पर छुरी चल रही हो और उसके मुह से आवाज निकल रही हो जसे। 'बहुत ज्यादा बुझदिल। न म गाव वाला का मार सकता हू, न मैं आपका कुछ बिगाड सकता न मैं मुझे मार सकता हू ।"

राधेश्याम आया मगर उसकी हिम्मत न पडी कि शेर बने गुर्रा रहे इसान को छू ले या देख ले। वे बाने जा रह थे, कमरे मे सोफो पर बैठे बडे समझदार कहलान वाले आदमी सुने जा रहे थे।

"आप अपनी कलम से कत्ल करत हैं ताकि सिवा आपके पावा से लिपटकर गिडगिडाने के सिवा वह कुछ भी न कर सके, कुछ भी न सोच सक । अनपढ सुनार भी हर धातु के टुकडे का पहले कसौटी पर परखता है, फिर अगला कदम उठता है। आपने जरा भी जाचा परखा नही, और ट्रासफर कर दिया ।

वह जितन निराशा स भरे थ, उतन क्रोध से और जितन अपन काय क सतोष स भरे थ, उतने अपमान स भरे कार्यालय से बाहर आय । चित्तौड स घर की ओर मुह हुआ ही नही। घर-बार सब मन की खुशी पर हैं। वे जल्दी स जल्दी झरझनी जाकर रिलिव हो जाना चाहत थ। दर करन से बात बढेगी, बदनामी फैलेगी और इज्जत बिगडेगी। बस ऐस लागा की दृष्टि का सामना करन की उनमे हिम्मत रतिक भी नही थी, जिनम उनका ट्रासफर करवा देने की विजय समायी हुई थी, और ऐसे लागा का वे देखना भी नही चाहते थे, जिन्होने उनके ट्रासफर लिए मा-बहन जसी नारी को वेश्या जैसी और गुरु पिता जस पुरुष को पापी

बताने जसी कमीनी हरकत की। जाआ चुपचाप स्कूल मे रिलीव हो जाओ मुह अधेरे गाव स रवाना हो जाआ।

चाज तो उ हान पहले ही बाट रखा था। जाते ही दूसरे दिन एक दो जरूरत के कागज बनान थ मो बनाकर रिलिव हो गये। स्टाफ न पार्टी की जगह जलपान और जलपान की जगह जल क लिए भी नही पूछा। न विदाई समाराह न प्यार दुश्मनी का एक शब्द। सामान उ हान आगे पाडे पर भेज दिया था। उनके पास ता केवल वही एक झाला था, जिस वे शुरु म अपन माथ लेकर आये थ।

शाता का उ ह इतजार था। वह नही आएगी, इज्जत की मारा बचारी घर म मरी जा रही हागी। वे भी उनके पास जाय ता क्या मुह लेकर! लेकिन चलती बार भी उसस न मिले यह कितनी वेजा बात होगी! कितनी आत्मवचक बुजदिली होगी। झाला बगल स निकालकर खू टी पर लटका दिया। किवाड लगाकर बिना साकल लगाय ही चल पडे।

नुक्कड की दुकान से आगे निकल ही थे कि पीछे से आवाज आइ— जा रहा है साला लाडली के यहा ' मौका है।' वे ठिठक गये वही। आदमी आग से बच सकता, पर जल से नही बच सकता, आदमी आदमी की उच्चता से बच सकता है उसकी नीचता स नही बच सकता। जाम हो गये वही।

दिल जाने क लिए निकल रहा था, पाव बढन म बिगड रहे थे। दिल के पाव नही पावा क दिल नही, खडे हा गये दिशा भ्रमित से।

फिर होश आया। लौट पड वही स।

झाला लिया, घर छोड दिया, फिर उस रास्ते से नही, दूसरे रास्ते स निकल और गाव छाड दिया। तालाब की पाल पर बठे हनुमान स नमस्कार किया, वहा बठे कुछ सज्जना स भी आदत-वश।

कइ पधार रया ओ हड माड साहब। मा हुणी तबादलो वेग्या आपका।"

"ये हेड मास्टर साहब वे ही हैं क्या ! कोई उन सज्जन का मिजाज पड़ा, सजा धजा शहरी मेहमान था। उसने अपनी बात या पूरी की— ऐसे ही होते हैं क्या मास्टर ! यह मास्टरी कौम इसी तरह उठा रही है क्या देश को ऊंचा !"

उनके तन-बदन में आग ही आग। पांव अड़ गये जलकर ठूंठ बन गये। दांत बंद हो गये, तप कर चिपक गये नयन जमीन में धंसने चल गये लपट से पथरा गये।

"ये तो आदमी हैं, या को कड़, हत्यरा हाडया चाटल। वो तो राड है वो नहीं व।"

'अरे पर मौमा मा, वे तो आदमी होकर निकल गये, उस औरत का क्या होगा।'

परदेशी कुत्ते जैसा जानवर भी गली के शेर बने कुत्तों का मुकाबला नहीं कर सकता। वे कितने निरीह प्राणी हो गये थे। हाहाकार लिये चल पड़े वहां से।

उन्होंने गांव का ऐसा क्या बिगाड़ लिया कि एक भी विदा करने नहीं आया। खेत खाने वाले पशु को भी किसान कुछ दूर तक छोड़ने जाता है। ऐसे बिना कसूर अपमानित होने का काम उसका कभी नहीं पड़ा। भारी आघात से व्यथित होने व चले जा रहे थे, आंखों में आंसू आ आ जा रहे थे।

नाला चढ़ते ही दो राह पर उन्हें सजी प्रतिमा सी, सांवली गुड़िया सी बबली खड़ी दिखाई दे गई। उसके पांवों में पंख लग गये, उड़कर उसके पास जा पहुंचे।

बबली ने हाथ की माला दोनों हाथों में पकड़कर खोल दी। वे घुटना के बल उसके सामने बैठ गये। कई पलों से घुमड़ रहे आंखों में बादल, स्नेह की शीतलता पाते ही बरस पड़े। मूसलाधार वर्षा होने लगी। बबली ने जेब से कुंकुम निकाला, माथे पर कहीं का कहीं तिलक निकाला, माला पहना दी, और नन्हे हाथों से उनके गालों को पोंछती खुद भी गंगा जमुना

चट्टाने लगी।

"बिटिया रानी मेरी बिटिया रानी म कुछ न कर सका तरे लिए। मेरी बनी रहना बिटिया।'

खीचकर उसे छाती स चिपका लिया। चूमते रहे उसे, रोत रहे रान रहे चूमने रहे। बबली के आंसू उनके गाल गीले करत रहे, उनके आँसू बबली के गाल भिगोत रह।

'आपका बबली मिल जायगी मुझे सर मिल जयगे?

हिचकी खाती हुई बबली ने एसा बोलकर उनकी जान ही निकाल दी।

बिटिया रानी मेरी बिटिया मेरी पगली मेरी बबली मेरी बेटी तू मेरी।"

छाती से फिर चिपका लिया उसे। खूब रोये सागर का पानी रीत गया। सूज गई आँखें, लाल हो गई। कलेजे पर पत्थर रख खडे हुए। अगुली बबली के हाथ म अटक गई। देखा बबली को बबली ने देखा उनको, देखने लगे दोनो एक दूसरे का।

दिन भर का चला सूरज, केवल लाल गोला बना पश्चिम के द्वारपर ठिठक कर खडा हो गया, और दखने लगा कि दिन भर के साथियो जैसा कोई साथी आगे तो मिलेगा नही। छूटे हुए साथिया म स कोई साथ आ जाये तो आगे बढू।

———